दैनिक

पुष्पांजली टुडे

MPHIN/2021/83938

नई सोच नई पहल

ग्वालियरः वर्षः 3 : अंकः 240 | ग्वालियर, सोमवार, 19 जून 2023 | पृष्ठः 8 मूल्यः 2 रुपए

न्यूज ट्रैक

ऊर्फ यें गर्मी का तांडव, बलिया में 72 घंटे के भीतर 54 लोगों की मौत, 400 बीमार

देश के उत्तरी राज्यों में भीषण गर्मी अब लोगों का काल बन रही है. इसका ताजा उदाहरण उत्तर प्रदेश के बलिया जिले में देखने को मिला है. यहां गर्मी के वजह से पिछले तीन दिनों में 54 लोगों की मौत हो गई है, जबकि 400 लोग हॉस्पिटल में भर्ती हैं. हालांकि डॉक्टरों ने इन मौतों के अलग-अलग कारण बताए हैं, लेकिन उन्होंने गर्मी को भी मौत की वजह मानने से इनकार नहीं किया है. डॉक्टरों का कहना है कि भीषण गर्मी की वजह से हॉस्पिटलों में मरीजों की संख्या तेजी के साथ बढ़ रही है. आपको बता दें कि उत्तर प्रदेश इस समय भयंकर लू की चपेट में है. यहां ज्यादातर स्थानों पर 40 डिग्री सेल्सियस से ज्यादा गर्मी पड़ रही है.गर्मी के चलते जिन मरीजों को अस्पतालों में भर्ती कराया गया है, उनमें बुखार, सांस लेने में परेशानी और उल्टी-दस्त जैसे दिक्कतें देखने को मिल रही हैं. बलिया जिला अस्पताल के प्रभारी चिकित्सा अधीक्षक एसके यादव ने जानकारी देते हुए बताया कि 15 जून को 23 लोगों ने दम तोड़ा, जबकि 16 जून को 20 और 17 जून को 11 लोगों की मौत हुई है. गर्मी से हो रही लोगों की मौतों से बलिया समेत पूरे प्रदेश में हड़कंप मचा हुआ है. इसके लिए राजधानी लखनऊ में एक जांच टीम का गठन किया गया है, जो बलिया आकर मामले की जांच करेगी. आजमगढ़ क्षेत्र के एडिशनल हेल्थ डायरेक्टर डॉ. बीपी तिवारी का कहना है कि जांच टीम इस बात का पता लगाने का प्रयास करेगी कि कहीं कोई ऐसी बीमारी तो नहीं है, जिसको ट्रेस नहीं किया जा रहा है. उन्होंने कहा कि ज्यादा गर्मी बढ़ जाने से मरीजों में सांस, डायबिटीज और रक्त चाप का खतरा बढ़ जाता है और ज्यादा तापमान बढ़ने से ऐसे लोगों की मौत भी हो सकती है. आपको बता दें कि दिल्ली-एनसीआर समेत पूरे उत्तर भारत में इस समय भयंकर गर्मी पड़ रही है. ऐसे में कई राज्यों में तापमान 45 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया है.

टीएमसी का आरोप : बंगाल के राज्यपाल राज्य के फंड का कर रहे दुरुपयोग

कोलकाता- तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) ने रविवार को पश्चिम बंगाल के राज्यपाल सी.वी. आनंद बोस पर निशाना साधा है। टीएमसी ने राज्यपाल पर निजी पोशाक और सामान खरीदने में राज्य सरकार के फंड का दुरुपयोग करने का आरोप लगाया है।तृणमूल के राज्य प्रवक्ता कुणाल घोष ने ट्विटर पर लिखा, क्या माननीय राज्यपाल जी ने अपनी कुछ ड्रेस, सूट, धूप का चश्मा, जूता सरकारी फंड से खरीदा है? अगर हां, तो यह पूरी तरह से अनैतिक है। उन्हें अपने पैसों से अपने सामान खरीदने चाहिए। गवर्नर हाउस के फंड का ठीक से ऑडिट होना चाहिए। अगर आरोप गलत है तो मैं माफी मांगने को तैयार हूं।कुणाल घोष ने शनिवार रात एक अन्य ट्वीट किया। राज्यपाल ने पिछले सप्ताह राज्य में पंचायत चुनावों के लिए नामांकन के दौरान हुई झड़पों और हिंसा वाली जगहों का दौरा किया था। इसको लेकर घोष ने उन्हें ताना मारा।घोष ने ट्वीट किया, राज्यपाल अपनी संवैधानिक मर्यादाओं से परे काम कर रहे हैं। वह चुनाव से पहले विपक्षी दलों को प्रोत्साहित कर रहे हैं, जिन्होंने तीन से चार बूथ क्षेत्रों में सुनियोजित हिंसा की है। हमारे कार्यकर्ताओं की मौत हो गई है। राज्य के बाकी हिस्सों में स्थिति सामान्य है। विपक्ष दलों ने अधिकतम संख्या में नामांकन दाखिल किए हैं। राज्यपाल खुद को विपक्षी ताकतों के अध्यक्ष के रूप में पेश करने की कोशिश कर रहे हैं।राज्यपाल ने शनिवार को दक्षिण 24 परगना जिले में संकटग्रस्त क्षेत्रों का दौरा किया था। उन्होंने कहा था कि दुर्भाग्य से कुछ इलाकों में मैंने लोकतंत्र की गिरावट देखी है। लेकिन मैं लोगों को बताना चाहता हूं कि लोकतंत्र में डरने की कोई गुंजाइश नहीं है। मैं राज्य के लोगों के साथ हूं। मैं अत्याचार, धमकी और हिंसा को बर्दाश्त नहीं करूंगा।डिस्क्लेमरः यह आईएएनएस न्यूज फीड से सीधे पब्लिश हुई खबर है. इसके साथ न्यूज नेशन टीम ने किसी तरह की कोई एडिटिंग नहीं की है. ऐसे में संबंधित खबर को लेकर कोई भी जिम्मेदारी न्यूज एजेंसी की ही

सेंथिल बालाजी का कैबिनेट में बने रहना हास्यास्पद : ईपीएस

चेन्नई- एआईएडीएमके के महासचिव के. पलानीस्वामी (ईपीएस) ने कहा है कि तमिलनाडु के गिरफ्तार मंत्री सेंथिल बालाजी का स्टालिन कैबिनेट में बने रहना हास्यास्पद है।पलानीस्वामी ने अत्तुर में पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि स्टालिन, सेंथिल बालाजी को अपने मंत्रिमंडल में बनाए रखकर खराब मिसाल कायम कर रहे हैं। करुणानिधि और जयललिता के कार्यकाल के दौरान, डीएमके व एआईएडीएमके के जिन मंत्रियों पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाया गया था, उन्हें कैबिनेट से हटा दिया गया था।उन्होंने कहा कि तमिलनाडु में एक राजनीतिक शालीनता थी और किसी ऐसे व्यक्ति को मंत्रिमंडल से हटा दिया जाना चाहिए जिस पर भ्रष्टाचार का आरोप लगा है। पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि सेंथिल बालाजी को मंत्रिमंडल से हटा दिया जाना चाहिए।प्रवर्तन निदेशालय ने मनी लॉन्ड्रिंग के आरोप में 14 मई को तमिलनाडु के ऊर्जा, उत्पाद शुल्क और मद्यनिषेध मंत्री सेंथिल बालाजी को गिरफ्तार किया था। हालांकि सेंथिल बालाजी के पास जो विभाग थे, वे अन्य मंत्रियों को दे दिए गए हैं

श्रीगंगानगर में सीएम अरविंद केजरीवाल और भगवंत मान के काफिले पर हमला

नई दिल्ली।राजस्थान के श्री गंगानगर में आम आदमी पार्टी के संयोजक और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान के काफिले पर हमला किया गया है. आम आदमी पार्टी ने दावा किया है कि श्री गंगानगर में उनके काफिले पर लाठी डंडों से हमला किया गया है. उनका आरोप है कि यूथ कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने यह काम किया है.राजस्थान के श्री गंगानगर जिले में रविवार को आम आदमी पार्टी की रैली थी. दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल और पंजाब के सीएम भगवंत मान आप की इस रैली को संबोधित करने के लिए जा रहे थे. इसी दौरान

जनसभा को संबोधित करने से पहले दोनों मुख्यमंत्रियों के काफिले पर यूथ कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने हमला बोल दिया. हालांकि, इस हमले में किसी को कोई चोटें नहीं पहुंची हैं.इसके बाद दिल्ली के मुख्यमंत्री केजरीवाल ने जनसभा को संबोधित करते हुए सीएम अशोक गहलोत पर जमकर निशाना साधा है. उन्होंने कहा कि हम जब यहां आ रहे थे तब हमने देखा कि पूरे श्री गंगानगर और इस स्टेडियम के ईदगिर्द गहलोत के बैनर पोस्टर लगे हुए हैं. उन्होंने आगे कहा कि पिछले 5 साल अगर उन्होंने काम किया होता तो उन्हें ऐसा नहीं करना पड़ता. 15-20 लोग रैली में यहां आए और वे कुर्सियां फेंकने लगे, ये सब कायरों की हरकत है. आप (अशोक गहलोत) ने पांच साल जनता के लिए कार्य नहीं किया और यही वजह है कि आप यह कर रहे हैं.

सीएम अशोक गहलोत पर जमकर निशाना साधा है. उन्होंने कहा कि हम जब यहां आ रहे थे तब हमने देखा कि पूरे श्री गंगानगर और इस स्टेडियम के ईदगिर्द गहलोत के बैनर पोस्टर लगे हुए हैं. उन्होंने आगे कहा कि पिछले 5 साल अगर उन्होंने काम किया होता तो उन्हें ऐसा नहीं करना पड़ता.

सीएम अरविंद केजरीवाल बोले- अगर गहलोत काम किए होते तो आज...

जयपुर।आम आदमी पार्टी के संयोजक और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने रविवार को राजस्थान के श्रीगंगानगर में जनसभा को संबोधित करते हुए गहलोत सरकार पर निशाना साधा है. उन्होंने आप की रैली में कहा कि इस रैली मैदान के चारों तरफ सीएम अशोक गहलोत ने अपने होर्डिंग्स लगवाए. अगर 5 साल काम कर लेते तो ये हरकत नहीं करनी पड़ती. इतनी बड़ी जनसभा यहां नहीं हुई. कुछ लोग यहां आ गए थे और कुर्सियां फेंक रहे थे. ये डरपोक की हरकत है. पांच साल काम नहीं किया. इसलिए गहलोत साहब को धक्की रैली खराब करने की जरूरत पड़ रही है.सीएम अरविंद केजरीवाल ने कहा कि गहलोत साहब आजकल हर दिन एक नया झुनझुना दे रहे हैं. मैं एक छोटा आदमी हूं, भगवंत मान एक मास्टर के बेटे हैं. हमें राजनीति करनी, दूसरों की रैलियां खराब करनी नहीं आती है. हमें काम करना आता है, हमारा काम बोलता है. हमारी पंजाब सरकार के एक साल के काम की चर्चा अभी से

चारों तरफ होने लगी है. आज हम नए राजस्थान का सपना लेकर आए हैं. कांग्रेस ने यहां 50 साल और बीजेपी ने 18 साल राज किया. दोनों ने मिलकर चूसा. आठ करोड़ राजस्थान वालों के साथ मिलकर हम एक नया राजस्थान बनाएंगे. उन्होंने आगे कहा कि किसी ने आज तक नहीं कहा होगा कि वोट दो तो अच्छी शिक्षा का इंतजाम करूंगा. मैं आज दिल्ली से यह कहने आया हूं कि हमें वोट दो, स्कूल बनाउंगा, बच्चों को डॉक्टर इंजीनियर बनाउंगा. राजस्थान में आज रजिस्टर्ड बेरोजगार युवा 18,500 हैं. कुल मिलाकर तो पचास हजार से ज्यादा होंगे. अशोक गहलोत क्या कर रहे हैं. मैंने दिल्ली में 12 लाख युवाओं को रोजरा दिया है. भगवंत मान तीन लाख युवाओं को रोजगार देने जा रहे हैं. दिल्ली के मुख्यमंत्री ने कहा कि हमने दिल्ली में सबका मुफ्त इलाज किया है. गहलोत साहब ने इंशोरेंस शुरू किया है, यह कब मिलेगा? जब अस्पताल में एडमिट होंगे तब. भगवान न करे बहुत सीरियस बीमारी के बाद ही एडमिट होना पड़ता है. ऐसी बीमारी में तो यह इंशोरेंस काम नहीं आएगा. दिल्ली में सब इलाज मुफ्त है. मुझे वोट दो राजस्थान के गांव गांव में मोहल्ला क्लिनिक खुलवा दूंगा. दिल्ली में किया है,

गुजरात के बाद अब इस राज्य में तबाही लाया बिपरजॉय, बाढ़ जैसे हालात

अरब सागर में उठा चक्रवात तूफान बिपरजॉय गुजरात के बाद अब राजस्थान में तबाही मचा रहा है. यह बिपरजॉय का ही असर है कि रेगिस्तान में पहली बार बाढ़ जैसे हालात नजर आ रहे हैं.वैज्ञानिक डॉ नरेश कुमार ने दिल्ली में कहा कि चक्रवात अभी दक्षिणी राजस्थान के मध्य में है. आज शाम तक इसका प्रभाव रहेगा. दक्षिणी राजस्थान में आज अति भारी बारिश हो सकती है. कल मध्य प्रदेश में भी भारी बारिश की संभावना है. उत्तर प्रदेश के दक्षिणी हिस्से में 2-3 दिनों में बारिश होगी. अरब सागर से आने वाली हवाओं के कारण दिल्ली एनसीआर में हल्की बारिश हो रही है.

साक्षी मलिक के दावे पर बोलीं बबीता फोगाट, कहा- बात ऐसी न कहो...

भारतीय कुश्ती संघ के पूर्व प्रमुख बृजभूषण सिंह के खिलाफ चल रहे पहलवानों के प्रदर्शन में रोजाना नई नई जानकारियां सामने आ रही है. शनिवार को पहलवान साक्षी मलिक और उनके पति सत्यव्रत कादियान की ओर से जारी किए गए एक वीडियो में उन्होंने दावा किया कि बीजेपी के दो नेताओं की ही आंदोलन की अनुमति दिलावाई थी. जिसे लेकर पहलवान साझी मलिक ने एक पत्र भी दिखाया. जिसमें दावा किया गया है कि बीजेपी नेता तीर्थ राणा और बबीता फोगाट ने उन्हें धरना देने के लिए कहा था. साक्षी मलिक के इस दावे के बाद रेसलर और बीजेपी नेता बबीता फोगाट ने एक ट्वीट किया. जिसमें उन्होंने कहा कि बात ऐसी ना कहो दोस्त की कह के फिर छिपानी पड़ जाए.साक्षी मलिक की ओर से शनिवार को जारी वीडियो में कहा गया कि कुश्ती से जुड़े लोगों को पता है कि पिछले 10 -12 सालों में महिलाओं से छेड़छाड़ और उत्पीड़न हुआ है. उन्होंने कहा कि यदि किसी ने अकेले आवाज उठाने की सोच बनाई भी तो बात फेडरेशन तक पहुंच जाती थी.

तेलंगाना भाजपा ने केसीआर को तेलंगाना के विकास पर बहस की दी चुनौती

हैदराबाद। भाजपा की तेलंगाना इकाई के अध्यक्ष बंदी संजय कुमार ने रविवार को मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव को पिछले नौ वर्षों के दौरान तेलंगाना के विकास पर बहस करने की चुनौती दी। उन्होंने कहा कि केंद्रीय मंत्री जी. किशन रेड्डी भाजपा की ओर से चर्चा में भाग लेंगे। उन्होंने करीमनगर में संवाददाताओं से कहा, मुख्यमंत्री को बहस के लिए आने दीजिए।संजय ने कहा कि मुख्यमंत्री केसीआर को अपनी सरकार और केंद्र द्वारा राज्य को दिए जाने वाले फंड पर बहस करनी चाहिए। उन्होंने मांग की कि केसीआर यह भी बताएं कि वह पिछले चुनावों के दौरान किए गए वादों को पूरा करने में क्यों विफल रहे और वह 5 लाख करोड़ रुपये का कर्ज कैसे चुकाएंगे।संजय ने दोहराया कि भाजपा तेलंगाना में अपने दम पर सत्ता में आएगी। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि भाजपा अच्छी योजनाओं को जारी रखेगी। उन्होंने कहा कि भाजपा कुछ बदलावों के साथ धरणी पोर्टल को भी जारी रखेगी। उन्होंने टिप्पणी की कि यह एक अच्छा कदम है,

शख्स ने गुस्से में बेटे को चाकू मारा, गिरफ्तार

दिल्ली ।फादर्स डे के दिन पूर्वी दिल्ली के आईपी एक्सटेंशन इलाके में 64 साल के एक शख्स ने गुस्से में अपने 23 वर्षीय बेटे को चाकू मार दिया। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने रविवार को यह जानकारी दी।पुलिस का कहना है कि आरोपी ने बेटे पर चाकू से उस समय वार किया जब वह झगड़े को शांत कराने की कोशिश कर रहा था।आरोपी अशोक सिंह इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड से सीनियर मैनेजर के पद से रिटायर हुए हैं। आरोपी का बेटा आदित्य कंप्यूटर इंजीनियर है और वह गुरुग्राम में काम करता है। घायल आदित्य को अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती कराया गया है।अशोक ने गुरुग्राम में एक फ्लैट खरीदा और भुगतान करने के लिए अपनी पत्नी मंजू को अपने सेल फोन पर एक ऐप डाउनलोड करने का निर्देश दिया।

दिल्ली यूनिवर्सिटी के साउथ कैंपस में छात्र की चाकू मारकर हत्या

नई दिल्ली।दिल्ली यूनिवर्सिटी के साउथ कैंपस में रविवार को एक दर्दनाक घटना हुई है. कुछ छात्रों के बीच हुई मामूली कहासुनी हत्या तक पहुंच गई है. साउथ कैंपस के आर्यभट्ट कॉलेज में कुछ आपस में लड़ाई झगड़ा करने लगे. इस दौरान एक छात्र ने चाकू निकालकर दूसरे छात्र पर हमला कर दिया, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई. पुलिस घटनास्थल पर पहुंचकर पूरे मामले की जांच पड़ताल कर रही है. बताया जा रहा है कि मृतक छात्र रविवार को साउथ कैंपस के आर्थभट्ट कॉलेज में क्लास लेने आए थे. कॉलेज के पास ही उसका और कुछ विद्यार्थियों के बीच किसी बात को लेकर कहासुनी हो गई. इसके बाद उनके बीच झगड़े होने लगे. इसी दौरान एक छात्र ने चाकू निकाला और दूसरे छात्र के सीने में वार कर लिया. सूचना पर आनन-फानन में पहुंची पुलिस ने घायल छात्र को अस्पताल में भर्ती कराया, जहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया. पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया हइस मामले में पुलिस ने कहा कि मृतक की पहचान निखिल के रूप में हुई है. वह पत्राचार से ग्रेजुएशन कर रहा था. मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, आर्यभट्ट कॉलेज में करीब एक हफ्ते पहले एक छात्र ने निखिल की गर्लफ्रेंड के साथ बदसलूकी की थी, जिसे पर निखिल ने आपत्ति जताई थी. इसके बाद बदसलूकी करने वाला छात्र ने आज दोपहर लगभग 12.30 बजे अपने 3 दोस्तों के साथ कॉलेज गेट के पास निखिल को घेरा और उसके साथ झगड़ा करने लगा. इसके बाद उसने दिनदहाड़े निखिल की हत्या कर दी.

कोविड- 19 में सराहनीय कार्य के लिए चौ रूपनारायण दुबे समाज कल्याण समिति सम्मानित

दैनिक पुष्पांजली टुडे
भिण्ड । मध्य प्रदेश वालेंटरी हेल्थ एसोसिएशन भोपाल के साथ जुड़कर स्वास्थ्य सेवाओं में सराहनीय कार्य कर रही भिड़ जिले से राज्य स्तरीय स्तर पर आयोजित सम्मेलन में कोविड- 19 के तहत बढ़ चढ़ कर कार्य करने हेतु मध्य प्रदेश वोलेंट्री हेल्थ एसोसिएशन द्वारा निदेशक मुकेश सिन्हा की अगुआई में एव भोपाल पुलिस कमिश्नर हरिनारायणाचारी मिश्रा,भोपाल कलेक्टर आशीष सिंह,पुलिस अधीक्षक भोपाल विनीत कपूर, ड्रग्स आयुक्त डॉक्टर घोटे की गरिमामई उपस्थिति में स्वास्थ्य विभाग मध्य प्रदेश टीकाकरण कार्यक्रम आभियान के संचालक संतोष शुक्ला एव अन्य अधिकारीगण समाजसेवि संस्थाओं की उपस्थिति में होटल पलास भोपाल में प्रदान किया गया।

मदीने वाले को मेरा सलाम कहना हाजियों से गले मिलकर मुस्लिम भाइयों ने किया इस्तकबाल.

खरगोन जिले
मुन्ना खान पुष्पांजली टुडे
खरगोन जिले के गोगावां में जुम्मे के रोज मक्का शरीफ के लिए हज पर जाने वाले गाँव के शा. शिक्षक शाकिर शेख व उनकी बीबी सबीना शेख, व दो बहनें शायरा शेख, शाईस्ता शेख जो गोगावा से मुंबई के लिए निकले। जो शनिवार को मुंबई से मक्का शरीफ की लिए हवाई जहाज से निकलेंगे। उनकी इस बिदाई से पहले परिवार जनों एवं गांव के वरिष्ठ जनो ने उन्हें गले मिलकर व फूलों की बारिश कर इस्तकबाल किया। साथ ही उनसे कहा कि मदीने वाले से हमारा भी सलाम अर्ज कहना। साथ ही इन हाजियो ने सभी से कहा की हमसे कोई गलती हुई तो उसके लिए माफी चाहते

है। वही शेख आंखों में आंसू लिए हर मुस्लिम भाई से रूबरू होकर गले मिल कर हर मुस्लिम भाई से माफी मांग रहे थे। हाजियों का यह इस्तकबाल करीब 3- 4 घंटे तक चलता रहा। चारो ये हाजी कई मुस्लिम परिवारों में पहुंचे। जहा उनका परिवार के लोगों ने हार फूल व मिठाई खिलाकर इस्तकबाल किया। बताते है।कि इन हाजियो का हज का ये सफर करीब दे? माह का रहेगा। तत्पश्चात वह अपने घर वापस गोगावां लौट आएंगे। इस मौके पर गोगावा शाहपुरा के उपसरपंच गुलाम मारवाड़ी, शा.कन्या हायर सेकेंडरी स्कूल शिक्षक स्टाफ, उर्दू प्राथमिक स्कूल शिक्षक स्टाफ, पत्रकार अजीजुद्दीन शेख, पत्रकार शफी शेख, हाजी मोहम्मद अयूब शेख, हाजी साबिर शेख, हाजी अब्दुल गफ्फार, रफीक शेख, डॉ. टी. शेख, डॉ. शाकिर शेख, डॉ एजाज शेख, आदि ने भी हाजियों का हारफूल माला पहनाकर इस्तकबाल किया।

हर्षदीप सिंह बने मध्यप्रदेश युवा कांग्रेस के प्रदेश सचिव

सीहोर। भारतीय युवा कांग्रेस के अध्यक्ष श्रीनिवास बी.वी.जी, मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष कमलनाथ के अनुमोदन एवं राष्टीय सचिव प्रभारी मध्यप्रदेश अखिलेश यादव, सह प्रभारीगण मानसिंह राठौर, नईम प्रधान की सहमति से मध्यप्रदेश युवा कांग्रेस के अध्यक्ष विक्रांत भूरिया ने मध्यप्रदेश युवा कार्यकारिणी का विस्तार किया है। जिसमें सीहोर जिले से युवा कांग्रेस नेता हर्षदीप सिंह को मध्यप्रदेश युवा कांग्रेस का प्रदेश सचिव नियुक्त किया है। हर्षदीप ने शीर्ष नेतृत्व का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि मुझे जो जिम्मेदारी सौंपी गई है उसका मैं पूरी ईमानदारी कर्मठता से युवा टीम के साथ निर्वहन करूंगा। हर्षदीप को बधाई व शुभकामनाऐं देने वालों में प्रमुख रूप से जिला कांग्रेस अध्यक्ष डॉ. बलवीर तोमर, वरिष्ठ कांग्रेस नेता ओम दीप, पूर्व विधायक सीहोर रमेश सक्सेना, पूर्व विधायक शैलेन्द्र पटेल, पूर्व नपाध्यक्ष राकेश राय, प्रीतम दयाल चौरसिया, राजाराम बड़े भाई, नईम नवाब, पूर्व पार्षद पवन राठौर, राजेश भूरा यादव, विजय उपाध्याय, रामप्रकाश चौधरी, शशांक सक्सेना, नरेन्द्र खंगराले, डॉ.अनीस खान, शंकर खरे, के.के.रिछारिया, भगवत सिंह तोमर, विवेक राठौर, वैभव राठौर, अखिलेश राठौर, असलम भाई, राहुल सोलंकी ,पंकज शर्मा आदि हैं।

जिले की विभिन्न ग्राम पंचायतों में प्रधानमंत्री जन सुरक्षा अभियान 30 जून तक

दैनिक पुष्पांजली टुडे
भिण्ड । प्रधानमंत्री जन सुरक्षा अभियान के तहत् जिले के समस्त बैंक खाताधारकों प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना एवं प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना का लाभ देने हेतु जिले की समस्त ग्राम पंचायतों में बैंकों के माध्यम से 30 जून 2023 तक शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना के तहत् सभी बैंक खाताधारक जिनकी उम्र 18 से 70 वर्ष है। वार्षिक 20 रुपये प्रीमियम में दुर्घटना मृत्यु पर 2 लाख का दुर्घटना बीमा किया जाता है। दुर्घटना में आंशिक दिव्यांगता होने पर 1 लाख रूपये का सुरक्षा बीमा शामिल है। इसके अलावा प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना के तहत् 436 रुपये वार्षिक प्रीमियम में दो लाख का सुरक्षा बीमा किया जाता है। यह उन सभी बैंक खाताधारकों के लिए है जिनकी उम्र 18 से 50 वर्ष है।जिला अग्रणी बैंक प्रबंधक प्रताप सिंह ने बताया कि भारत सरकार के निर्देशानुसार प्रधानमंत्री जन सुरक्षा अभियान के तहत् 30 जून 2023 तक जिले के सभी बैंकों द्वारा प्रत्येक ग्राम पंचायत स्तर पर कैंप लगाकर लोगों का बीमा किया जाना है। उन्होंने बताया कि जिन लोगों का बीमा अभी तक नहीं हुआ है। वे सभी आमजन आगामी 30 जून 2023 तक नजदीकी संबंधित बैंक शाखा में जाकर एवं आयोजित कैम्पों में जाकर फार्म भरें और प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना और प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना के तहत् बीमा पॉलिसी लेकर अपने परिवार के भविष्य को सुरक्षित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें। उन्होंनेआमजन से प्रधानमंत्री जन सुरक्षा अभियान को सफल बनाने एवं प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना और प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना का ज्यादा से ज्यादा लाभ लेने का आग्रह किया।

ओपन योगासन कार्यक्रम का हुआ समापन

पुष्पाजंली टुडे
बेंगलुरू ऱ्दीर्घायु योगा संस्थान एवं नेहरू युवा केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में नागर भावी स्थित कनक सभागार मैं आयोजित कर्नाटका स्टेट ओपन योगासन चैंपियनशिप 2023 के समापन समारोह में विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत करते हुए मुख्य अतिथि महेंद्र मुणोत ने अपने वक्तव्य में कहा योग से शरीर को शक्ति मिलती है एवं मन को शांति मिलती है नियमित योगाभ्यास करने से व्यक्ति स्वस्थ एवं सुख मय जीवन बिता सकता है संस्थान के योगाचार्य गणेश ने मुणोतको सम्मानित किया ।

काव्य गोष्ठी में हुआ साहित्यकारों का सम्मान

सीहोर। स्थानीय अन्नपूर्णा कॉलोनी गणेश मंदिर रोड पर सृजन साहित्य परिषद एवं अखिल भारतीय साहित्य परिषद के संयुक्त बैनर तले मासिक काव्य गोष्ठी का आयोजन (फादर्स-डे) के अवसर पर किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सृजन साहित्य परिषद के नवनिर्वाचित अध्यक्ष विनोद पंसारी ने की। विशेष अतिथि के रूप में गजलकार धर्मराज देशराज उपस्थित रहे। सर्वप्रथम माँ सरस्वती के चित्र पर पुष्पमाला अर्पित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। अतिथियों का स्वागत पुष्प माला से किया गया। फादर्स डे के अवसर पर कार्यक्रम में उपस्थित वरिष्ठजनों का सम्मान अंग वस्त्र उड़ाकर किया गया। सरस्वती वंदना गीतकार जोरावर सिंह ने प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन अखिल भारतीय साहित्य परिषद के जिला अध्यक्ष डॉ. विजेंद्र जायसवाल ने किया। इस अवसर पर काव्य पाठ करने वाले कवियों में द्वारका बांसुरिया, विनोद पंसारी, धर्मराज देशराज जोरावर सिंह, हीरालाल शर्मा, रामसिंह परमार, डॉ. विजेंद्र जयसवाल, जितेंद्र राठौर, लक्ष्मण सिंह चौकसे, बालमुकुंद राय, कनक जयसवाल, यश वजयसवाल आदि मुख्य रूप से रहे। अंत में आभार हीरालाल शर्मा ने व्यक्त किया।

सेवा सहकारी समिति कुम्हारी खुर्द ने ब्याज माफी योजना में लाभान्वित किसानों को बांटे प्रमाण पत्र

पुष्पांजली टुडे न्यूज बालाघाट
मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के द्वारा हाल ही में लागू की गई कृषक ब्याज माफी योजना अपात्र किसानों के लिए लाभकारी साबित हो रही है। प्रदेश सरकार ने उन अपात्र किसानों जिन्होने 2 लाख रूपये तक कर्ज लिया हैं और वे इसे जमा नहीं कर पाने से अपात्र हो गये हैं। उन अपात्र किसानों के ब्याज को माफ किया हैं। राशि अधिक हो जाने के कारण समिति स्तर पर ना ही तो वे धान को समर्थन मूल्य पर बेच पा रहे थे और ना ही खाद-बीज को लेकर कोई लेन देन कर पा रहे थे। पर अब इस ब्याज माफी योजना में वे फिर से पात्र हो गये हैं। सरकार ने उनके ब्याज को माफ कर दिया हैं और किसान पर जितने ऋण लिये गये हैं उतना ही मूलधन रह गया हैं। किसानों को इस मूलधन की राशि को जमा करना हैं। ताकि आगे भी उसे समिति स्तर पर लाभ प्राप्त हो सके।

कृषकों को घर घर जाकर बांटे जा रहे हैं प्रमाण पत्र-ब्याज माफी का लाभ प्राप्त करने वाले कृषकों को डिफाल्ट मुक्त होने का प्रमाण-पत्र सेवा सहकारी समिति के द्वारा जारी किया जा रहा है। इसी कड़ी में सेवा सहकारी समिति मर्यादित कुम्हारी खुर्द के द्वारा ग्राम दिघोरी, कुम्हारी खुर्द, जिवनारा, सिहारी एवं घोटी घुसमारा के लाभान्वित कृषकों को डिफाल्ट मुक्त होने का प्रमाण-पत्र अपनी टीम के द्वारा घर घर जाकर प्रमाण पत्र वितरित किया गया। और उन्हें बताया गया कि शून्य प्रतिशत ब्याज दर योजना अंतर्गत ऋण स्वीकृत कर पूर्व कालातीत बकाया मूलधन की राशि तक ऋण वितरण किया जा सकेगा। योजनान्तर्गत लाभान्वित कृषकों को कृषि कार्य के लिए खाद उपलब्ध कराने की विशेष सुविधा दी जायेगी। जितनी राशि कृषक अपने ऋण खाते में नगद जमा करेंगे, उतनी राशि तक का खाद समिति से ऋण के रूप में कृषक प्राप्त कर सकेंगे। उक्त प्रमाण पत्र बांटने के दौरान आर के गेडाम संस्था प्रबंधक, निलेश बल्लारखेड़े लेखापाल , राकेश तिवारी, नोहर लाल समरीते, धनेश्वर दशरिया, विजय दमाहे एवं अन्य का सहयोग प्राप्त हुआ।

पूर्व विधायक कटारे ने राष्ट्रीय महासचिव जेपी अग्रवाल से की मुलाकात

दैनिक पुष्पांजली टुडे
भिण्ड । अटेर के पूर्व विधायक हेमंत सत्यदेव कटारे ने कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव और मध्यप्रदेश के प्रभारी पूर्व सांसद जेपी अग्रवाल से दिल्ली पहुंचकर उनके निज निवास पर मुलाकात की। श्री अग्रवाल ने कटारे का शाल और कांग्रेस की पट्टिका गले में डालकर स्वागत किया। श्री अग्रवाल ने कहा पिछले 15 वर्षो से कांग्रेस मध्यप्रदेश से सत्ता से बाहर थी और एक लम्बे संघर्ष के बाद वापिसी की , मगर जनमत लूटकर भाजपा फिर से सत्ता पर कब्जा किया। इसलिए आप जैसे युवा कार्यकर्ताओं में जोश भरकर कांग्रेस सरकार बनाने में सहायक साबित होंगे। श्री कटारे ने क्षेत्र की जानकारी देते हुए कहा आपका और श्री कमलनाथ का कुशल चुनाव तथा रणनीति, प्रशासनिक अनुभव और सतत कांग्रेस कार्यकर्ताओं के सम्पर्क में रहना,हम सबके उत्साह को ब?ाता है, और आपके द्वारा प्राप्त ऊर्जा कांग्रेस सरकार बनाने ने मदद गार बनाने में सहायक सिद्ध होगी। श्री कटारे ने राजनीतिक विषयों पर चर्चा की।

नशामुक्त भारत अभियान के अंतर्गत अवैध शराब बनाने वालों के विरुद्ध हट्टा पुलिस ने की कार्यवाही

पुष्पांजली टुडे न्यूज बालाघाट
पुलिस मुख्यालय के द्वारा 12 जून 2023 से 26 जून 2023 तक चलाये जा रहे नशामुक्त भारत अभियान के अंतर्गत अवैध मादक पदार्थों पर कार्यवाही हेतु श्रीमान पुलिस अधीक्षक महोदय , बालाघाट के मार्गदर्शन में श्रीमान अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक महदोय बैहर , बालाघाट व श्रीमान अनुविभागीय अधिकारी (पुलिस) लांजी जिला बालाघाट के द्वारा थाना प्रभारी हट्टा के नेतृत्व में एक टीम का गठन कर थाना हट्टा क्षेत्रांतर्गत अवैध मादक पदार्थों के विक्रय करने वालों पर कार्यवाही व उक्त मादक पदार्थों निर्माण पर रोक लगाने हेतु अभियान चलाया गया था। उक्त टीम के द्वारा 17 जून को थाना हट्टा क्षेत्रांतर्गत ग्राम लोहारा में योगेश पिता हरिलाल बनवाले के घर के बाड़े में चल रही अवैध महुआ शराब बनाने की हाथ भट्टी को पकड़ने में सफलता प्राप्त की । जिसमें आरोपी के कब्जे से शराब बनाने का सामान व 60 लीटर अवैध हाथ भट्टी की कच्ची शराब को जप्त किया गया। उक्त कार्यवाही के दौरान आरोपी द्वारा अवैध शराब निर्माण हेतु गलाकर

रखा गया महुआ लहान करीब 1,000 लीटर को भी नष्ट किया गया है। पुलिस के द्वारा 15-15 लीटर की 04 जरिकेन में कुल जुमला 60 लीटर अवैध कच्ची हाथ भट्टी की महुआ शराब , जर्मन का एक बर्तन , एक प्लास्टिक का पाईप जप्त किया गया। इस बड़ी कार्रवाई में हट्टा थाना से उपनिरीक्षक विजय सनस , का . सउनि चन्द्रप्रकाश अमूले , का . सउनि जयदयाल पटले , का.सउनि धनेश वल्के , का . सउनि लक्ष्मीचंद बाहेश्वर , प्र . आर . 63 महेश बिसेन , का.प्र.आर. 796 रमेश उके , का.प्र . आर . 941 द्वारिकानारायण दुबे , का.प्र . आर . 944 सुयब अली , का.प्र . आर . 317 संदीप सोनेकर , आरक्षक क्रं . 1084 विनोद कुमरे , आरक्षक क्रं . 1258 कमलेश भौतेकर , आरक्षक क्रं . 1089 रूपेन्द्र ठाकरे , आरक्षक क्रं . 1151 मोहन पटेल , आरक्षक क्रं . 570 शक्ति सिंह चौधरी , आरक्षक क्रं . 368 रूपचंद डेकाटे , आरक्षक क्रं . 52 सुरेन्द्र चंदेल , आरक्षक क्रं . 1527 गितेश परदेशी , आरक्षक क्रं . 1290 नरेन्द्र पटले , आरक्षक क्रं . 1121 रविशंकर बघेल की सराहनीय भूमिका रही।

महात्मा ज्योतिबा फूले सभाग्रह एवं सेन समाज सभाग्रह का विधायक हिना कावरे करेगी लोकार्पण

हनुमान मंदिर के पास व्यायाम शाला भवन होगा भूमिपूजन

पुष्पांजली टुडे न्यूज बालाघाट
लांजी विधानसभा में विकास कार्य को लेकर विधायक सुश्री हिना कावरे के हस्ते लगातार लोकार्पण एवं भुमिपूजन कार्यक्रम को निष्पादित किया जा रहा है। इसी विकास कार्यों की कड़ी में विधायक निधी द्वारा निर्मित महात्मा ज्योतिबा फूले सभाग्रह मरार टोला भानेगांव तथा सेन समाज सभाग्रह का लोकार्पण एवं भानेगांव हनुमान मंदिर के पास व्यायाम शाला भवन का भुमिपूजन कार्यक्रम 21 जून को दोपहर 3 बजे दुर्गा मंदिर चौक बस स्टैंड भानेगांव में आयोजित किया गया है। उक्त आयोजन में मुख्य अतिथि सुश्री हिना लिखीराम कावरे विधायक लाँजी- किरनापुर, अध्यक्ष श्रीमती अर्चना खोंगल अध्यक्ष ज.पं. लाँजी,मुख्य अतिथि शेषराम रहांगडाले उपाध्यक्ष जिला कांग्रेस कमेटी, बालाघाट, देवेन्द्र खोंगल पूर्व. जनपद अध्यक्ष लाँजी, अजय अवसरे उपाध्यक्ष जनपद पं. लाँजी, श्रीमती ज्योति ईश्वर उमरे जिला पं.सदस्य, रेवाराम करहाटकरे ज.पं.सदस्य एवं सभापति महिला बाल विकास, भरत कालबेले समाज सेवी, ऋषि पटेल दशरिया अध्यक्ष कांग्रेस कमेटी, बहेला, ओंकार रहांगडाले अध्यक्ष, कांग्रेस कमेटी, लॉजी, ललित कबीरे अध्यक्ष सरपंच संघ लाँजी की गरिमामई उपस्थिति में संपन्न होगा। उक्त भूमिपूजन एवं लोकार्पण समारोह में राम कुमार ठाकरे सरपंच, सुरेश पांचे उपसरपंच, अनिल कामड़े सचिव, सुरेश भिमटे ग्राम रोजगार सहायकसमस्त पंचगण एवं समस्त ग्रामवासी ग्राम पंचायत भानेगांव ने सभी से उपस्थित होने की अपिल की है।

चार वर्ष पूर्व में हुई लूट का खुलासा आरोपी मेहगांव पुलिस की गिरफ्त में

पंकज त्रिपाठी
दैनिक पुष्पांजली टुडे
भिण्ड । पुलिस अधीक्षक मनीष खत्री एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कमलेश कुमार खरपूसे के निर्देशन में असामाजिक तत्वों एवं गुण्डा बदमाशों की धरपकड तथा चोरी व लूट की वारदातों की पतारसी हेतु समस्त राजपत्रित अधिकारियों एवं समस्त थाना प्रभारियों को मुखबिर तंत्र विकसित करने के लिये लगातार निर्देशित किया जाता है।इसी क?ी में अनुविभागीय अधिकारी पुलिस मेहगांव आर. के. एस राठौर के मार्गदर्शन में थाना प्रभारी मेहगांव निरीक्षक ओमप्रकाश मिश्रा द्वारा दिनांक 16/06/23 को तकनीकी की मदद तथा मुखबिर द्वारा सूचना के आधार पर एक संदेही को हिमाइयापुरा थाना बिजोली जिला ग्वालियर से से दबिश देकर पकडा गया जिससे पूछताछ पर आरोपी ने जुर्म करना स्वीकार किया कि दिनांक 20/08/2019 की शाम को मौ रोड पिपरोली मोड़ पर मोटर साईकिल चालक को रोककर एक सोने की चेन, एक मोवाईल, नगदी 5000 रूपये छिन लिये थे। संदेही द्वारा लूट

करना स्वीकार करने पर आरोपी को गिरफतार कर दिनांक 17/06/23 को को माननीय न्यायालय प्रस्तुत कर पुलिस रिमांड पर लिया गया तथा रिमांड के दौरान छिना गया सामान आरोपी के कब्जे से एक सोने की चेन व 3 हजार रूपये जप्त किये गये। यह है घटनाक्रम ञ्दिनांक 22/08/2019 को फरियादी राजीव पुत्र परमाल सिंह गौर निवासी पिपरोली ने थाना उपस्थित आकर रिपोर्ट की कि कोई तीन अज्ञात व्यक्तियों द्वारा दिनांक 20/08/2019 की शाम 8 बजे उसकी मोटर साईकिल को रोककर कोई तीन अज्ञात व्यक्तियों द्वारा एक सोने की चेन, एक मोवाईल, 5 हजार रूपये नगदी छिन लिये थे। उक्त रिपोर्ट पर से अपराध क्रमांक 320/2019 धारा 392 भादवि. 11/13 एमपीडीपीके एक्ट कायम कर विवेचना में लिया गया।उक्त उल्लेखनीय कार्य में थाना प्रभारी मेहगांव निरीक्षक ओमप्रकाश मिश्रा, का.सहायक उपनिरीक्षक रामप्रसाद,प्रधान आरक्षक जितेन्द्र पारासर,आरक्षकों में गौरीशंकर, मायाराम,हेमन्त सिंह,सैनिक केदार सिंह की मुख्य सराहनीय भूमिका रही।

सालेभाठा में किराना दुकान और घर में लगी भीषण आग, लाखों रुपए की सामग्री जलकर खाक

संवाददाता हेमचंद नागेश

मैनपुर। गरियाबंद जिले के आदिवासी विकासखंड मैनपुर के दूरस्थ क्षेत्र में बसा ग्राम सालेभाठा के एक ग्रामीण के घर व किराना दुकान में अचानक आग लगने से किराना दुकान में रखे लाखों रुपए के सामग्री जलकर खाक हो जाने की जानकारी मिली है। वही पीड़ति ग्रामीण के परिवार इस घटना से बेहद परेशान हो गए हैं। ग्रामीण के पास अपनी जीविका का मुख्य साधन किराना दुकान ही था। ग्रामीण के किराना दुकान में आग लगने की जानकारी लगते ही क्षेत्र के पूर्व विधायक एवं पूर्व संसदीय सचिव गोवर्धन मांझी ने तत्काल फोन से पीड़ति परिवार से बात कर उन्हें मुआवजा दिलाने का आश्वासन दिया है। मिली जानकारी के अनुसार तहसील मुख्यालय मैनपुर से लगभग 65 किलोमीटर दूर ग्राम सालेभाठा निवासी टेकराम मांझी के घर में आज शनिवार शाम अचानक आग लग गई। देखते ही देखते आग भड़क उठा। परिवार के लोग जान बचाने घर के बाहर निकले। ग्रामवासियों ने अपने हिसाब से हैंडपंप और कुए से पानी निकालकर आग को बुझाने की कोशिश की लेकिन आग पर काबू नहीं पाया जा सका। इस आगजनी से टेकराम मांझी के घर में जहां आग लग गई वहीं उनके कपड़े व घर के अन्य सामग्री पूरी तरह जलकर खाक हो गए। पीड़ति टेकराम मांझी किराना दुकान संचालित कर रहे थे। आग लगने के कारण किराना दुकान मे रखे के लाखों रुपए के सामान भी जलकर राख में तब्दील हो गया। परिवार परेशान है। आगजनी की घटना खाना बनाने के समय हवा चलने से चिंगारी के छिटकने के कारण हुई है ऐसी जानकारी मिल रही है।

मैनपुर तहसीलदार ने किया मतदान केंद्र का निरीक्षण,कर्मचारियो के दिये आवश्यक दिशा निर्देश

संवाददाता हेमचंद नागेश

मैनपुर। मैनपुर विकासखंड के ग्राम पंचायतो के रिक्त पदों के लिये मतदान कि तिथि तय होने के बाद गाँवों मे सरगर्मी तेज हो चुकी है कई ग्रामो मे पंच सरपंच के रिक्त पदों मे पंच सरपंच निर्विरोध बन चुके है तो वही जिन ग्राम पंचायतो मे एक से अधिक प्रत्याशीयो ने पंच सरपंच पद के लिये ?र्म भरा है वहा चुनाव होना है चुनाव को लेकर ब्लाक के अधिकारियों ने तैयारियां शुरू कर दिया है रविवार को मैनपुर तहसील के मतदान केंद्रों के निरीक्षण मैनपुर तहसीलदार श्री वसीम सिद्दीकी ग्राम तौरेगा पहुँचे तहसीलदार श्री वसीम सिद्दीकी ने मतदान केंद्र का निरीक्षण कर मतदान केन्द्रो मे पेयजल व्यवस्था ,शौचालय , विद्युत आपूर्ति के बारे में जानकारी ली और प्रधान पाठक को आवश्यक निर्देश दिए।

महाप्रभु श्री जगन्नाथ जी के श्री गुंडीचा मंदिर तैयार

संवाददाता हेमचंद नागेश

अमलीपदर। धर्म नगरी ग्राम अमलीपदर में विराजमान गांव के हृदय स्थल श्री जगन्नाथ जी के पवित्र रथयात्रा में भगवान अपने बलदाऊ बलराम बहन सुभद्रा के साथ अपने मौसी श्री गुंडीचा रानी के यहां प्रस्थान करते हैं और वहां पवित्र देवशयनी एकादशी के एकदिवसीय पुर्व श्री मंदिर वापस आते है इसी तरह गांव में बसस्टैण्ड पर भव्य श्री गुंडीचा मंदिर तैयार हो गया है जिसकी भव्यता चारों ओर व्याप्त है और गांव में रौनकता बिखेर रहा है श्री गुंडीचा मंदिर की भव्यता अलौकिक रूप में भक्तों को दर्शन दे रहे हैं ।

गोहरापदर में भाजपाइयों ने गुरुनारायण तिवारी के नेतृत्व में सुनी गई मन की बात

संवाददाता हेमचंद नागेश

गोहरापदर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मासिक मन की बात के 102वें संस्करण को मंडल अध्यक्ष गुरुनारायण तिवारी ने बूथ क्र.158 गृह ग्राम गोहरापदर में भाजपाइयों एवं आम नागरिकों के साथ सुना।इस दौरान मन की बात करते प्रधानमंत्री मोदी ने खेल प्रबंधन में भारत के विकसित ताक़त,योग दिवस की थीम एक विश्व एक परिवार,विश्व प्रसिद्ध भगवान जगन्नाथ रथयात्रा,2025 तक टीबी मुक्त भारत के संकल्प जैसे विषयों पर चर्चा की.साथ ही भारत के लोकतांत्रिक इतिहास के काले दिन 25 जून जिस दिन भारत में आपातकाल लगा था,प्रधानमंत्री मोदी ने कहा भारत लोकतंत्र की जननी हैं,ऐसे घटना भारत के इतिहास का काला दौर था।इस अवसर पर भाजपा मंडल अध्यक्ष गुरुनारायण तिवारी,दुर्गा प्रसाद मिश्रा,गिरधर नागेश, गुनसागर यादव,तुलसी नागेश,देवो कश्यप,रोहित नागेश,भुपेश कश्यप,उपस्थित रहे।

सच्ची शांति मिलती है तो ब्रह्माकुमारी संस्थान में- न्यायाधीश मनोज कुमार राठी

विदिशा/प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय मुखर्जी नगर में कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें अपर सत्र न्यायाधीश मनोज कुमार राठी जी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि जीवन में मुक्ति चीज है तो वह है शांति व्यक्ति के पास पैसा है बंगला है गाड़ी है लेकिन शांति नहीं शांति के लिए वह चारों ओर भटक रहा है मैं मानता हूं कि अगर सच्ची शांति कहीं मिल पा रही है तो ब्रह्माकुमारीज में आकर के मिल पा रही हैं मेरा दो दिन के लिए माउंट आबू जाना हुआ था और मैंने सच्ची शांति महसूस की है। ब्रह्माकुमारी रेखा दीदी ने ईश्वर सर्वव्यापी नहीं है विषय पर गीता के आधार पर अपने विचार रखते हुए कहा कि गीता में कहा गया है मैं तुम्हारा पिता हूं पिता का भी पिता हूं सारे जगत का पिता हूं गीता अध्याय 9 के श्लोक 17, गीता के प्रथम पृष्ठ पर ही तुम ही हो माता पिता तुम ही हो, कहा गया है। उसको गॉडफादर भी कहा जाता है उसी को परमपिता भी कहा जाता है। गीता में कहा गया है मैं तुम्हारा गुरु हूं, गुरुओं का भी गुरु, सारे जगत का गुरु अध्याय 11 श्लोक 43, मैं तुम्हारा गाइड मार्गदर्शक हूं। अध्याय 13 श्लोक 22, सूर्य और तारागढ़ की भी पार वही मेरा निवास स्थान है अध्याय 15 श्लोक 6, रहने के स्थान को ब्रह्मा निर्माण, ब्रह्म भुवन, परमधाम या ब्रह्म निर्माण कहा गया है अध्याय 5 श्लोक 25, अध्याय 8 श्लोक 16, अध्याय 8 श्लोक 21, अध्याय 14 श्लोक 4, जब-जब धर्म की ग्लानि होती है

अदूरदर्शिता से तैयार तेल नदी पर बनी एक और सिंचाई योजना फेल

अब विभाग द्वारा इस योजना का लाभ लेने सर्पोटिंग योजना तैयार किया जा रहा है

संवाददाता हेमचंद नागेश

मैनपुर। तेल नदी पर बनी एक और जलप्लावन योजना भी फैल हुआ अदूरदर्शिता से तैयार इस योजना का लाभ लेने अब सपोर्टिंग योजना तैयार किये जाने की जानकारी मिली है, मैनपुर विकासखण्ड के उरमाल में तैयार सबसे बड़ी सिंचाई योजना के पहले छोटे रूप में तेल नदी देवभोग पर ही कोदोबेड़ा के पास भी एक जलप्लावन बनाया गया था, उरमाल जलप्लावन की नींव 70 के दशक में रखी गई थी, बाद में कोदोबेड़ा घाट पर बनाया गया है, हालांकि कोदोबेड़ा घाट पर बनाये गए जलप्लावन उरमाल से पहले 2011 में बन कर तैयार हो गया 10 से भी ज्यादा गांव को सींचने यंहा 12 किलोमीटर का मूख्य नहर बनाया गया है,योजना पिछले 05 साल से बन्द पड़ा है, बरसाती नदी पर बनाये जाने कारण यह भी, नदी के कम बहाव के चलते सफल नही हुआ,आलम यह है कि नहर किनारे मौजूद खेतो में सोलर पम्प के सहारे खेतो की सिंचाई हो रही है, हेड वर्क व जीरो चैन से 300 मीटर दूरी पर मौजूद कुम्हड़ई कला के किसानों नहर किनारे

मौजूद खेत को सींचने सौर सुजला योजना के तहत सोलर पम्प लगाया हुआ है।योजना की नहर गुजरने वाले गांव दबनई, नवागुड़ा, दहीगांव, निष्ठिगुड़ा, परेवापाली के दर्जनों किसानों ने नहर किनारे मौजूद खेतो में सोलर योजना के सहारे सिंचाई लाभ लेने मजबूर है। योजनाओ को वेंटीलेटर सपोर्ट उरमाल योजना को सपोर्ट देने बनने जा रहे एनीकेट पर ओड़िसा सरकार की आपत्ति के बाद अब जलप्लावन के नजदीक डायवर्शन योजना का प्रपोजल तैयार किया जा रहा है। अमाड़ डायवर्सन करेगा सपोर्ट कोदोबेड़ा घाट पर बने तेलनदी जलप्लावन को जलप्लावन योजना का हेडवर्क भले ही शो पीस बना रहे,पर स्कीम के तहत बने नहरों का उपयोग करने विभाग ने जोड़ तोड़ शुरू कर दिया है, कोदोबेडा घाट से महज 1किमी के ऊपर हाल ही में अमाड़ ब्यपवर्तन योजना बना कर तैयार किया गया है, इस योजना में 22 गाव के 1600 हेक्टरेयर को सींचने 20 किलोमीटर का मूख्य नहर बनाया गया है, दबनई तक पहूँचते ही अमाड़ योजना का नहर तेलनदी जलप्लावन से सटने लगता है, दोनों योजना के नहर को जोड़ने महज 300 मीटर नहर बनाना पड़ेगा, इस नहर के बनते ही ठप्प पडे जलप्लावन के नहरों से भी सिंचाई का पानी जा सकेगा। क्या कहते है अफसर सिंचाई विभाग के एसडीओ दीपक पाठक ने कहा कि जल्द ही इस योजना की मंजूरी मिलते ही आगामी दो साल के बाद उरमाल जलप्लावन से शतप्रतिशत सिंचाई सुविधा कमांड एरिया तक मिलने लगेगा। उन्होने कहा कि अभी नया बजट में करोडो रूपये की राशि स्वीकृत हुई है।

गरियाबंद जिला के 1000 भाजयुमो कार्यकर्ता मुख्यमंत्री आवास घेरने जाएंगे रायपुर :डॉ योगीराज माखन कश्यप

संवाददाता हेमचंद नागेश

देवभोग । प्रदेश की भूपेश बघेल सरकार की पी एस सी घोटाले को लेकर किये जा रहे मुख्यमंत्री निवास घेराव कार्यक्रम में युवा जोश के साथ संग्राम करेंगे इसी तारतम्य में भारतीय जनता युवा मोर्चा के जिलाध्यक्ष डॉ योगीराज माखन कश्यप ने कहा कि कल भाजयुमो जिला गरियाबंद के कार्यकर्ता पदाधिकारी एवं महाविद्यालय छात्र एवं पीएससी अभ्यर्थी के साथ एक हजार की संख्या में सीएम निवास घेराव करने वाले कार्यक्रम के लिए रवाना होंगे डॉक्टर योगीराज ने कहा कि भूपेश सरकार वर्तमान में सिर्फ और सिर्फ मूक दर्शक बन कर देख रही है जिनके पास भ्रष्टाचार के अलावा कोई कार्य करने योग्य नहीं बचा है भ्रष्टाचार सरकार अपने सगा संबंधी भाई बेटा बेटी दामाद को पद देने के लिए होड़ में लगी हुई है जिससे प्रदेश के शोषित वंचित दलित वह पिछड़े तबके से आने वाले छत्तीसगढ़ महतारी के दुलरुवा बेटा बेटियों को परीक्षा में बैठने नहीं दिया जा रहा है या कहे कि उनका दुर्भाग्य है कि उन्हें परीक्षा हाल में बैठने योग्य तक भी नहीं समझा जाता है और पास भी हो गए तो पैसे की डिमांड के कारण कांग्रेस की भ्रष्ट सरकार की उदासीनता के कारण प्रदेश नेतृत्व के आह्वान पर भाजयुमो जिलाध्यक्ष योगीराज माखन कश्यप एवं जिला पदधिकारियों के कुशल संयोजन में 1000 युवा कार्यकर्ता गरियाबंद से रायपुर सीएम आवास घेराव करने के लिए रवाना होंगे जिसके लिए भोजन की व्यवस्था राजिम में किया गया है तथा जिला भाजपा के वरिष्ठ पदाधिकारीयों के द्वारा हरि झंडी दिखा कर रवाना किया

खैरी नई बस्ती में भाजपा को जड़ से खत्म करने बसोर समाज ने ली शपथ

रीवा । बंसल समाज के सुअर पशुपालकों को मृत सुअरों का मुआवजा दिलाए जाने के साथ-साथ पशु चिकित्सा विभाग के खिलाफ कार्यवाही किए जाने को लेकर संयुक्त किसान मोर्चा की अगुवाई में बंसल समाज का आंदोलन 256वें दिन जारी रहा मोर्चे के संयोजक शिव सिंह ने बताया कि आज तक शिवराज की तानाशाह हुकूमत ने आंदोलनकारियों की मांगों का निराकरण नहीं किया आंदोलनकारी रीवा शहर की खैरी नई बस्ती में इस आशय की शपथ लिये कि आंदोलनकारियों का प्रत्येक दिन भाजपा एवं उसकी सत्ता सरकार के खिलाफ होगा बंसल समाज उनके किसी भी रैलियों सभाओं कार्यक्रमों में शामिल नहीं होगा साथ ही अन्य समाज को भी रोकने का प्रयास करेगा तथा भाजपा के नेताओं को बस्तियों में प्रवेश नहीं करने देगा प्रत्येक चुनावो में विरोध करेंगे और यदि भाजपा के लोग पैसा रुपैया बांटकर वोट प्रभावित करने का काम करेंगे तो उनका जबरदस्त विरोध किया जाएगा साथ ही जिले से लेकर प्रदेश स्तर तक भारतीय जनता पार्टी को जड़ से खत्म करने निरंतर अभियान जारी रहेगा दौरान कार्यक्रम आंदोलनकारियों में प्रमुख रूप से प्रदीप बंसल सकोचिल प्रसाद बंसल राजाराम जालिम रामस्वरूप शौखीलाल मुलई रामशरण सुरेश मुकेश राजेंद्र शिवशंकर राहुल देवदास रेनू बाई विमला रामकली राधा मुरतिया गंगी दूइजी सुरेश राकेश उषा सुखचैन विद्याधर भैयालाल कुसुम सागर आदि सहित सैकड़ों जन उपस्थित रहे ।

ग्राम पंचायत साल्हेभाटा के पूर्व सचिव रूपेंद्र यादव पर अभी तक नहीं हुई कोई कार्यवाही जनदर्शन में किया गया था शिकायत

गरियाबंद जिला मैनपुर ब्लॉक ङ्क ग्राम पंचायत साल्हेभाटा के पूर्व सचिव रूपेंद्र यादव के द्वारा स्कूल निर्माण कार्य की राशि आहरण कर निर्माण नहीं किया गया जिसका शिकायत जनदर्शन कार्यक्रम गोहरापदर में शिक़ायत किया गया था शिकायत आने पर कलेक्टर प्रभात मलिक द्वारा बर्तमान एसडीएम हितेश पिस्दा को आदेश दिया गया कि ग्राम पंचायत साल्हेभाटा में पूर्व सचिव रूपेंद्र यादव स्कूल निर्माण कार्य की राशि आहरण कर राशि गमन किया है सचिव रूपेंद्र यादव के ऊपर स्वढ्ढकर वसूली किया जाए परन्तु अभी तक ना कार्यवाही किया गया और ना ही वसूली सचिव रूपेंद्र यादव जिस पंचायत में पदस्थ थे । वहा पर कई कारनामों को अंजाम दिया है। परन्तु अभी तक कोई कार्यवाही नहीं हुई है। जिम्मेदार अधिकारी शासन की राशि गमन करने वाले पर मेहरवान हैं। लाखो की राशि को

डकार कर मगरमच्छ बन कर बैठ गए हैं कितना भी प्रकाशन किया जाए कोई कार्यवाही नहीं किया गया है ग्राम पंचायत सचिव सरपंच के ऊपर कार्यवाही ना होने के कारण भ्रष्टाचार चरम सीमा बढ़ती जा रही हैं। कार्यवाही के नाम से केवल खानापूर्ति किया जाता है । दिखावा किया जाता है लाखों के की राशि सरपंच सचिव के द्वारा गवन किया गया है। एसडीएम कार्यालय में प्रकरण चल रहा है। परंतु प्रकरण कई वर्षों तक चलने के बावजूद भी वसूली प्रक्रिया पूर्ण तरीके से नहीं किया जाता है जिसके कारण सरपंच सचिव की मनमानी यहां पर साफ दिखाई देता है। ग्राम पंचायत साल्हेभाटा में पूर्व सचिव रूपेंद्र यादव स्कूल निर्माण कार्य की राशि आहरन किया गया। साल्हेभाटा कई निर्माण कार्य से दूर है जिसकी राशि निकाली गई है आंगनवाड़ी अधूरा पड़ा हुआ है और कई ऐसे मामले हैं जहां पर ग्राम पंचायत सचिव के द्वारा राशि आहरन कर ली गई है परंतु अभी तक किसी प्रकार से कार्यवाही नहीं हुई है ग्राम पंचायत मैं सीसी रोड नहीं बनने के बावजूद भी सीसी रोड बोड जहां पर लगा है वहां पर किसी प्रकार से सीसी रोड नहीं बना है। परंतु ग्राम पंचायत में कई अधूरे कार्य पढ़े हुए हैं मगर अभी तक कोई कार्यवाही, नही हुई है।आधिकारीयो से जानकारी लेने पर कहा जाता है कार्यवाही हो रही है।

सम्पादक की कलम से

भ्रूण के भ्रम

मनुष्य भले ही दुनिया का नीति-नियंता बनने का दंभ भरे लेकिन तमाम वैज्ञानिक उन्नति के बावजूद कुदरत के तमाम सवाल आज भी अनुत्तरित हैं। वो बात अलग है कि दुनिया वर्चस्व बनाने की कवायद में जुटी विश्व की महाशक्तियां बाजार त अनुसंधानों के जरिये नये-नये दावे करती रहती हैं। भले ही पनिवेशक सत्ताओं के दिन अब लद गये हों लेकिन वैज्ञानिक व सूसंधान से हासिल नवीनतम ज्ञान के जरिये वे विश्व पर राज के ने लगातार देखती रहती हैं। यह बात सर्वविदित है कि डायनामाइट आविष्कारक अल्फ्रेड नोबेल को कालांतर में इसके मानवता के ये अभिशाप साबित होने को लेकर अपराधबोध हुआ था। फिर ोंने दुनिया में शांति के प्रयासों को प्रोत्साहन के जरिये पश्चाताप ने का प्रयास किया। हाल ही में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की उन्नत नीक तैयार करने वाले वैज्ञानिक ने भी इसके भयावह परिणामों भांप कर माफी मांगी और खुद को इस प्रोजेक्ट से अलग कर या। परमाणु शक्ति की खोज ने हिरोशिमा व नागासाकी को जो दिया, उसने ऐसे शोध-अनुसंधान की नैतिकता पर प्रश्नचिन्ह ड़े किये हैं। अब वैज्ञानिकों का दावा है कि उन्होंने पुरुष शुक्राणु र स्त्री अंडाणुओं का इस्तेमाल किये बिना मानव भ्रूण बनाने में मयाबी हासिल कर ली है। दलील दी जा रही है कि इससे जेनेटिक प्रऑर्डर्स को समझने में मदद मिलेगी। मसलन बार-बार गर्भपात जैसी समस्याओं के जीव वैज्ञानिक कारणों को समझने में ायता मिलेगी। निस्संदेह, दुनिया में तमाम नई खोजों के आविष्कार वक्त इसका मकसद मानवता का कल्याण भी बताया गया। केन जब भी कुदरत की नैसर्गिक व्यवस्था को चुनौती देने के ास किये गये, उसके घातक परिणाम ही सामने आए हैं। पिछले ों जिस कोविड नामक महामारी ने दुनिया की आर्थिक व ामाजिक व्यवस्था को तहस-नहस कर दिया, उसको लेकर चीन की में विषाणु तैयार करने की बहस अभी तक किसी निष्कर्ष पर ं पहुंच पायी है। बहुत संभव है कि कालांतर में स्टेम कोशिकाओं जरिये मॉडल मानव भ्रूण विकसित करने के प्रयासों को लेकर क व वैधानिक प्रश्नों को लेकर नई बहस शुरू हो जाये। ख़नीय है कि वैज्ञानिकों ने स्टेम सेल के जरिये तीन मॉडल मानव ण तैयार कर लिये हैं। प्रथम द्रष्टया में, ये भ्रूण आरंभिक चरण मानव भ्रूण जैसे ही हैं। जिसको लेकर कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी के सर और इंटरनेशनल सोसायटी फॉर स्टेम सेल रिसर्च खासी ाहित हैं। लेकिन जानकार मान रहे हैं कि कृत्रिम भ्रूण का कित्सीय अनुसंधान के लिये तुरंत प्रयोग किये जाने की संभावना ा ही है। जाहिर है कि किसी कृत्रिम भ्रूण को किसी महिला के ाशय में प्रत्यारोपित करने की कोई भी कोशिश हाल-फिलहाल नून के खिलाफ होगी। यदि तुरंत इसका इस्तेमाल नहीं हो सकेगा इस अनुसंधान की अगली कड़ी तलाशना भी सहज नहीं होगा।

अनंत आकांक्षाओं के अम्बर हैं पिता

'पा' कहनेभर को एक छोटा-सा शब्द, किंतु वास्तव में पूरा संसार खुद में समेटे। आकाश से कहीं विस्तृत, सागर से कहीं गहरा। 'पापा' यानी एक ऐसा विशाल वटवृक्ष जिसकी सघन छाया तले शैशव पल्लवित होता है, जिसकी सुदृढ़ भुजाएं झूला बनकर बचपन पर निसार होती हैं, जो हर ताप-संताप से परिवार की रक्षा करता है।

मां के धैर्य की तुलना यदि धरती से की गई तो पापा के स्थान को नभसदृश गौरवमयी आंका गया। मां ममता की साक्षात् मूरत है तो पापा कर्मठता के प्रतीक। मां जहां संतान के लिए समूचा जीवन दांव पर लगा देती है, वहीं पापा पारिवारिक सुख-सुविधाएं जुटाने में जीवनपर्यन्त तत्पर रहते हैं। मां के आंचल में शीतल दुलार है तो पापा की अंगुली में नन्हे क़दमों की पुख्ता रफ्तार है। संस्कारों व आदर्शों की घुट्टी से जीवन को पोषित करने वाली यदि मां है तो उन आदर्शों का यथार्थ से तालमेल बिठाने वाले पिता ही हैं। दोनों का महत्व एक-दूसरे से कहीं कमतर नहीं। सोनोरा डॉड द्वारा पितृ-दिवस आयोजन को पारम्परिक रूप देने के पीछे निस्संदेह यही कारण रहा होगा।

मूलतः कृषक, सोनोरा डॉड के पिता ने बतौर सैनिक भी राष्ट्रीय सेवाएं प्रदान कीं। पत्नी का असमय निधन होने पर, माता-पिता के सम्पूर्ण दायित्व का निर्वाह उन्होंने अकेले ही किया। उनके समर्पण के प्रति नतमस्तक, सोनोरा डॉड ने वॉशिंगटन के स्पोकेन शहर में पितृ-दिवस मनाने का निर्णय लिया। 19 जून, 1910 को पहला पितृ-दिवस मनाया गया। 1916 में अमेरिकी राष्ट्रपति वुडरो विल्सन ने पितृ-दिवस मनाने संबंधी प्रस्ताव को मंजूरी दी। वर्ष 1966 में राष्ट्रपति लिंडन जॉनसन ने इसे जून के तृतीय रविवार मनाने का निर्णय लिया। 1972 को राष्ट्रपति निक्सन द्वारा प्रथम बार पितृ-दिवस पर अवकाश घोषित किया गया।

बाहर से जितने कठोर प्रतीत होते हैं पापा; भीतर से उतने ही मृदुल, संवेदनशील। बिलकुल किसी नारियल की ही भांति, जिसके कठोर, रूखे-सूखे आवरण में सरसता सुरक्षित बनी रहती है। वास्तव में यह संतान को संयमित, अनुशासित व कर्मठ बनाने का प्रयास ही तो है ताकि स्नेहातिरेक उद्दण्डता, आलस्य व कर्महीनता के प्रभावी होने का कारण न बन जाए। बिलकुल एक बर्तन को आकार प्रदान करने की प्रक्रिया, जिसमें कुम्हार जब बाहर से

थपथपाता है तो भीतर बराबर हाथ दिए रहता है।

'मैं हूं न' यह संक्षिप्त-सा वाक्य प्रोत्साहन के रूप में जीवन को नवस्फूर्ति प्रदान करने में अभूतपूर्व योगदान देता है। बचपन में जब नन्हे-नन्हे क़दम चलने के प्रयास में लड़खड़ा जाते हैं तो पापा के स्नेहिल हाथ माटी झाड़ते हुए, पुनः आगे बढ़ने हेतु प्रेरित करते हैं। किशोरवय में जब मन सतरंगी स्वप्न बुनने लगता है तो पापा ही हैं जो इस स्वप्निल उड़ान को सशक्त पंख देते हैं। दिग्भ्रमित होने पर दिशा ज्ञान देते हैं, शिक्षक बनकर जीवन जीने की कला सिखाते हैं, मित्र बनकर उलझनें सुलझाते हैं। कर्मभूमि में योद्धा बनकर चुनौतियां स्वीकारना; निर्भीकता, सजगता तथा बुद्धि कौशल के सुमेल से विजेता बनना; यह मूलमंत्र भी तो पापा ही देते हैं। पराजित कांधे पर हाथ धरकर हिम्मत बंधाते हैं तो विजयी होने पर पीठ थपथपाते हैं; सरल शब्दों में, हमसाया होते हैं पापा। किसी मासूम बच्चे से यदि प्रश्न किया जाए कि दुनिया का सबसे ताक़तवर व अमीर व्यक्ति कौन है, तो निःसंकोच उत्तर होगा 'पापा'। निःसंदेह, जहां बच्चे की रक्षा की बात हो, पापा पूरी दुनिया से लोहा लेने की क्षमता रखते हैं। जेब भले ही ख़ाली हो, लेकिन बच्चे की ख्वाहिश पूरी न हो पाए, पापा को यह कदापि गवारा नहीं। बच्चे की छोटी-सी मांग पूर्ति हेतु अपनी ज़रूरतों में कटौती करना भी सहर्ष स्वीकार्य है पापा को। यह परम्परा न केवल पिता के प्रति सम्मान अथवा श्रद्धा का प्रतीक मात्र है बल्कि यह हमें संतान के रूप में निज कर्तव्य-निर्वाह का स्मरण भी कराती है। जीवन की अंतिम वेला में जब शरीर निर्बल होने लगे, तो अपनत्व के अहसास से उन्हें मानसिक तुष्टि व पुष्टि प्रदान करना हमारा सर्वोपरि धर्म बन जाता है। उनकी हर ख़्वाहिश का सम्मान करना, उन्हें पूर्ण आदर-सत्कार देना ही सही अर्थों में पितृ-धर्म है। आजकल पितृ-दिवस पर उपहार देने का भी ख़ासा चलन है। केक काटकर पितृ-दिवस मनाते हुए क्षणों को कैमरे में क़ैद करके सोशल मीडिया पर शेयर करना स्टेटस सिंबल बन गया है। बेशक़, ख़ुशियां बांटने से दुगुनी होती हैं और संदेश भी अच्छा जाता है, बशर्ते इस सब के पीछे गहरी आस्था व वास्तविक समर्पण भाव हो।दरअसल, भक्ति वहां होती है जहां भाव हो और भाव वहां होता है जहां परवाह तथा स्नेह का आभास स्वतः ही होने लगे। 'पा+पा' का अर्थ ही है- पाना। पापा सिर्फ़ देना जानते हैं, क़ीमती उपहार उनके लिए कोई मायने नहीं रखते। उन्हें चाहिए, तो केवल संतान का निश्छल प्रेम। जीवन के सांध्यकाल में कदाचित् कंपकंपाते हाथों से प्याला छलक जाए तो उन्हें लज्जित अथवा अपमानित अनुभव कराने की अपेक्षा दो हाथ आगे बढ़ें और नेह से भीगे स्वर में बस इतना भर कह दें 'कोई बात नहीं पापा, मैं हूं न', ठीक वैसे ही, जैसे अब तक पापा हमेशा कहते आए हैं।

हमारा प्रतिपल अपने जनक के प्रति अर्पित हो, 'पितृ-दिवस' यही स्मरण दिलाने की पावन परम्परा है और यही इस दिवस विशेष को मनाने का प्रयोजन भी। भला उस सुदृढ़ आधारशिला को कैसे विस्मृत कर सकते हैं, जिसके निःस्वार्थ समर्पण पर ही हमारे भविष्य की भव्य इमारत बनना संभव हो पाया?

ध्यान खींचने के लिए और क्या-क्या करें

यह शिकायत तो खैर हमेशा ही ी है कि उनकी तरफ कोई ध्यान हीं देता। लेकिन अब तो हद हो यी साहब, मणिपुर पिछले हीनेभर से देश का ध्यान अपनी ोर खींचने की कोशिश कर रहा । वहां इतनी जबर्दस्त मार-काट ची है। दो समुदाय एक-दूसरे की ान के दुश्मन बने हुए हैं। फिर भी ोई ध्यान नहीं दे रहा। राजस्थान में ीणा और गूजर लड़े थे तो सबका ध्यान फौरन उस तरफ चला गया ा। हरियाणा में जाट आंदोलन के मय जाट एक ओर थे और बाकी ब दूसरी ओर। सबका ध्यान तुरंत उधर चला गया था। ठीक है भाई ब राजस्थान में भी भाजपा की रकार थी और हरियाणा में भी ाजपा की ही सरकार थी। तो अब णिपुर में भी तो भाजपा की ही रकार है, उस तरफ कोई ध्यान यों नहीं दे रहा। बात डबल इंजन ो नहीं है कि वहां एक इंजन राब हुआ पड़ा है। खराब ही नहीं बल्कि डिरेल हुआ पड़ा है। बेशक वहां इंजनों की कमी नहीं है। पूरे पूर्वोत्तर में इंजन ही इंजन हैं। खुद भाजपा इस पर गर्व करती है कि केंद्र के इंजन के साथ वहां सारे के सारे इंजन उसी की गाड़ी में लगे हुए हैं। फिर भी कभी असम और मेघालय की पुलिस में दनादन गोलियां चलने लगती हैं और कभी मणिपुर में कुकी और मेतेई के बीच मार-काट शुरू हो जाती है। इसके बावजूद कोई उधर ध्यान ही नहीं दे रहा। ठीक है कि टीवी चैनलों पर हमेशा हिंदू-मुसलमान होता रहता है। करो। पर कभी कुकी-मेतेई भी तो कर लो यार। क्या गूजर-मीणा नहीं किया था, क्या जाट और अन्य नहीं किया था? अच्छी बात है जंतर-मंतर पर बैठी महिला पहलवानों को दिखाया। पुलिस द्वारा उन्हें घसीटना दिखाया, यह और अच्छी बात है और अब जब आप आंदोलन करने वाले किसानों को भी दिखाने लगे हैं तो जख्मों से भरे मणिपुर की तरफ भी देख लेते। महाराष्ट्र से लेकर मध्यप्रदेश तक सब तरफ तो ध्यान चला जाता है, बस पूर्वोत्तर की तरफ ही नहीं जाता। वहां त्रिपुरा में भाजपा वाले जिस तरह से विपक्ष वालों को कूटते हैं, उसे तो चलो मत देखो। पर जख्मों से भरे मणिपुर को तो देख लो। दंगों के चलते कोई घर छोड़कर भागा हुआ है, तो कहीं आतंकवादी मारे जाते हैं। यह तो हो सकता है कि वहां सब तरफ भाजपा ही भाजपा है तो फिर देखना क्या और दिखाना क्या। लेकिन इससे भाजपा के मुख्यमंत्रियों के नाराज होने का खतरा हो सकता है। अकेले हेमंत विश्व शर्मा को राहुल गांधी का मजाक बनाते आखिर कितना देखोगे और दिखाओगे। कभी मणिपुर के मुख्यमंत्री बीरेन सिंह को भी देख लो और दिखा दो जिन्होंने मणिपुर को राष्ट्रीय चर्चा का विषय बनने लायक बना दिया।

पेज-6 बांग्लादेश की टेस्ट में अब तक की सबसे बड़ी जीत

विकास-शोध में ज्यादा फायदा उठाने का मौका

प्रधानमंत्री मोदी की 21-24 जून की आगामी अमेरिका यात्रा के दौरान भारत-अमेरिका द्विपक्षीय रिश्तों में शिखर वार्ता स्तर की राजनीतिक दिलचस्पी और नीति संबंधी विमर्श होने की आस है। कार्यसूची में व्हाइट हाउस में राष्ट्रपति बाइडेन द्वारा रिवायती स्वागत समारोह और अमेरिकी संसद के संयुक्त सदनों को प्रधानमंत्री मोदी का संबोधन शामिल है। इस किस्म का शिष्टाचार द्योतक है उस विशेष सम्मान का, जब अमेरिका को किसी मुल्क और उसके नेता को तरजीह देनी होती है।इस यात्रा का एक मुख्य पहलू रक्षा क्षेत्र में सहयोग बनाना है। अतएव यात्रा से पूर्व, मंत्री और वरिष्ठ अधिकारी स्तर पर मिल-जुलकर काफी तैयारियां की गई हैं। इस सिलसिले में अमेरिकी रक्षा मंत्री लॉयड ऑस्टिन ने नयी दिल्ली में 5 जून को भारतीय समकक्ष राजनाथ सिंह से मुलाकात की है। वार्ता का मुख्य ध्यान रक्षा क्षेत्र में दोनों देशों के बीच औद्योगिक स्तर का सहयोग बनाने पर केंद्रित रहा। दोनों पक्ष आपसी सलाह से नये और वर्तमान तकनीक सहयोग की शिनाख्त करने एवं दोनों मुल्कों के बीच रक्षा संबंधी नव-उद्यमों के लिए सहयोग में इजाफा करने को तैयार हैं। दोनों राष्ट्रों ने हालिया नई पहल यानी रक्षा के तमाम क्षेत्रों में द्विपक्षीय रक्षा सहयोग को विस्तारार्थ उन्नत और परिष्कृत रक्षा तकनीक सहयोग के लिए भारत-अमेरिका उन्नत गतिमान तंत्र (इंडस-एक्स) बनाने के फैसले का स्वागत किया है। साथ ही, भारतीय विदेश सचिव विनय मोहन क्वात्रा ने 6 जून को वाशिंगटन पहुंचकर भारत-अमेरिका सामरिक सहयोग वार्ता में भाग लिया। इसका उद्देश्य महत्वपूर्ण तकनीकी क्षेत्र सहयोग में आगे विस्तार और व्यापार संभावनाओं की पहचान करना था। इसमें सेमीकंडक्टर, अंतरिक्ष, टेलीकॉम, क्वांटम, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, बायोटेक और अन्य विधाएं शामिल हैं। जाहिर है

तकनीक सहयोग का यह परिदृश्य बहुत बृहद है। कार्यसूची में जो विषय ज्यादा ध्यान खींचता है, वह है, अमेरिका निर्मित जीई एफ-414 जेट इंजन। उम्मीद है इस पर सहमति बन जाएगी। इससे यह इंजन संयुक्त रूप से विकसित करने का मौका हमें मिल जाएगा। यह स्वदेशी लड़ाकू विमान बनाने में बहुत मददगार होगा, जो अब तक इस किस्म की क्षमता से महरूम है। अमेरिकी सुरक्षा सलाहकार जैक सुलिवन की हालिया दो-दिवसीय यात्रा का मकसद रहा कि मोदी की यात्रा में परिणाम पाने में जहां कहीं कमी दिखे, वह सुधारी जा सके, क्योंकि विषय-वस्तु अधिकांशतः जेट इंजन और उच्च तकनीक सहयोग पर केंद्रित रहने वाला है। तथापि, इस किस्म के रिवायती सैन्य मंचों पर सहयोग के अलावा भारत के लिए असल चुनौती अमेरिका का साझेदार बनकर तकनीकी क्षेत्र में एक बड़ी छलांग लगाना होगा जो हमारी भावी युद्ध शैली को शक्ल देगा। मोटे तौर पर, सहयोग के नए क्षेत्रों में अंतरिक्ष, जलगत, साइबर, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी महत्वपूर्ण तकनीक हैं। लेकिन क्या भारत अमेरिका के साथ प्रभावी सहयोग करने की स्थिति में है ताकि तकनीकी क्षेत्रों में प्राप्त नवीन ज्ञान के आधार पर आत्मनिर्भरता पाने में सही मायने में बड़ी छलांग बन सके? यहीं पर शब्द 'सर्वतंत्र' पर ध्यान केंद्रित होता है और मौजूदा हालातों के आधार पर, लगता है ढांचागत और व्यवस्थात्मक कमियों के चलते भारत के पास वह आवश्यक तंत्र नहीं है जिससे अमेरिका के साथ अर्थपूर्ण सहयोग पूरा परिणाम दे सके और आत्मनिर्भरता के प्रयासों में तेजी बन सके और यही अंतिम उद्देश्य भी है।

नई परिष्कृत तकनीकों में प्रवीणता पाने की मात्रा, हमारी ज्ञान-ग्राह्यता की थाह और अनुसंधान एवं विकास के लिए निरंतर निवेश करने पर निर्भर होगा। अनुसंधान एवं विकास और नई खोजों के क्षेत्र में अमेरिका को दुनियाभर में अव्वल माना जाता है, चीन दूसरे पायदान पर है और अगले कुछ दशकों में पहले स्थान के लिए दृढ़-संकल्प है। किसी देश की तकनीकी क्षमता का सूचकांक उसके वैज्ञानिकों द्वारा विज्ञान एवं इंजीनियरिंग संबंधित पत्रिकाओं में आलोचनात्मक विवेचनार्थ पेश किए खोज-पत्रों की संख्या है। वर्ष 2020 में चीन ने 6,69,000 खोज-पत्रों के साथ अमेरिका (4,56,000) को पछाड़ दिया। 1,49,000 खोज-पत्रों के साथ भारत तीसरे स्थान पर रहा। भारतीय ढांचे में अनुसंधान एवं विकास क्षेत्र में निवेश की मद में कमी सबसे बड़ी विद्रूपता है, जबकि यह अवयव नई खोज के आधार पर वास्तविक प्रारूप तैयार करने और आगे उत्पादन प्रणाली की नींव है। भारत अपने सकल घरेलू उत्पाद का महज 0.7 प्रतिशत अनुसंधान एवं विकास पर खर्च करता है, जो कि अमेरिका (2.8), चीन (2.1), इस्राइल (4.3) और दक्षिण कोरिया 4.6 फीसदी से कहीं कम है। हालांकि, डीआरडीओ सरकारी धन से चालित एक मुख्य रक्षा अनुसंधान इकाई है, लेकिन यह भी सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों को दरपेश मुश्किलों और जरूरत से कम धन मिलने से ग्रसित है। भारत का कॉर्पोरेट सेक्टर भी अनुसंधान एवं विकास क्षेत्र के प्रति उदासीन है, फॉर्ब्स पत्रिका में भारत के इस 'बंजर परिदृश्य' की चौंकाने वाली तस्वीर पेश की गई है। यह लेख पांच देशों की सबसे ज्यादा मुनाफा कमाने वाली कंपनियों की तुलना करते हुए बताता है कि वर्ष 2021 में अमेरिकी कंपनियों ने अनुसंधान एवं विकास के लिए 152 बिलियन डॉलर, चीन (31 बिलियन) जापान (37 बिलियन), जर्मनी (53 बिलियन) और भारत में 0.9 बिलियन डॉलर लगाए। यह निवेश राशि कुल कमाए मुनाफे में, अमेरिका (37 फीसदी), चीन (29), जापान (43) जर्मनी (55) तो भारत 2 प्रतिशत का रहा। हमारी स्थिति अपनी कहानी खुद बयान करती है अर्थात् अनुसंधान एवं विकास पर सतत निवेश करना नई खोज और दीर्घकाल में व्यावसायिक लाभ पाने लिए पूर्व-शर्त है। अतएव, भारत को अपने अनुसंधान एवं विकास तंत्र को सींचना होगा। इससे आत्मनिर्भरता पाने की दिशा में शिक्षा संबंधित ढांचागत कमियां भी दूर हो सकेंगी। आज तकनीक और ज्ञान में बदलावों की गति बहुत तेज है और विश्व के अग्रणी उच्च शिक्षा संस्थानों में अनुसंधान कर रहे युवा वैज्ञानिक इसके वाहक हैं। हमारे यहां शैक्षणिक योग्यता वर्गीय विचारधारा और राजनीतिक हितों की भेंट चढ़ रही है, जिससे ज्ञान की खोज का उत्साह मर रहा है। अमेरिका से उच्च-तकनीक क्षेत्रों में अर्थपूर्ण सहयोग का लाभ उठाने की काबिलियत के लिए जो तंत्र चाहिए, वह अनुसंधान एवं विकास के ढांचे के लिए रखे गए मौजूदा न्यून धन से पल्वित नहीं हो सकता। अफसोस, यही नग्न सच्चाई है।

शिवपुरी कोतवाली पुलिस की बड़ी कार्यवाही

शहर में दुकानों के ताले तोड़कर चोरी करने वाले आरोपियों को पकड़कर चोरी गया माल एवं चोरी के 5 दो पहिया वाहन किए जप्त

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी-दिनांक 14.06.23 के तडके जब शहर अपनी नींद से जागा तो 3पता चला शिवपुरी कि शहर के ह्रदय स्थल माधव चैक के समीप ही पुराने बस स्टैण्ड के पास महेश्वरी किराना स्टोर के ताले टूटे हुये थे एवं दुकान से नगदी सहित कुछ किराना का सामान चोरी चला गया , कीमत व रकम के हिसाब से चोरी बडी नहीं थी किंतु शहर के बीचों-बीच में हुई नकब्जनी पुलिस को चुनौती देने वाली थी। पुलिस कप्तान श्री रघुवंश सिंह भदौरिया ने शहर में हुई इस बारदात को प्राथमिकता से लेते हुये अधीनस्थ स्टाफ को यथायोग्य टास्क दिये एवं व्यापारीजन को आश्वाशत किया कि इस बारदात का शीघ्र ही खुलासा किया जावेगा। पुलिस अधीक्षक से मिले निर्देशानुसार अति. पुलिस अधीक्षक श्री प्रवीण भूरिया एवं नगर पुलिस अधीक्षक श्री अजय भार्गव के निर्देशन में

कोतवाली पुलिस ने लगातार 20 घण्टे तक कंट्रोल रूम में सीसीटीव्ही को खंगाला एवं इसमें मिले फुटेज के आधार पर कुछ लोकल कैमरों की मदद लेकर अज्ञात चोरों के बारें में कुछ महत्वपूर्ण जानकारी एकत्रित की, तदोपरांत सायवर सैल की मदद से अज्ञात चोरों के बारें में पुलिस एक निश्चित मुकाम पर पहुंची और पुलिस ने घटना में शामिल तीन आरोपियों में से दो को गिरफ्तार कर लिया है एवं उनके कब्जे से घटना में प्रयुक्त मोटर सायकल एवं अन्य जगह से चोरी किये पांच दो पहिया वाहन तथा चोरी गई रकम एवं सामान भी जप्त किया है। पकडे गये आरोपियों में एक नावालिग अपचारी बालक भी है, पूरे घटना क्रम में कोतवाली के उनि. दीपक पालिया, सउनि. अमृतलाल, प्रआर0 142 नरेश याद, प्रआर. 618 अवधेश कुमार, प्रआर. 26 कुलदीप शर्मा, आर. 206 भूपेन्द्र यादव, आर. 767 अजीत सिंह राजावत, आर. 248 भोले सिंह राजावत, आर. 528 महेन्द्र सिंह तोमर, आर. 709 शिवांशु यादव, आर. चालक 446 रामजी पाराशर एवं कंट्रोल रूम में पदस्थ उनि. ब्रजेन्द्र सिंह राजपूत एवं आर. प्रीतम शाक्य की भूमिका महत्वपूर्ण रही है।

विशेष जागरूकता अभियान अभिमन्यु के चलते पुलिस अधीक्षक

शिवपुरी के निर्देशन मे शिवपुरी पुलिस द्वारा गांधी पार्क एवं मटका पार्क शिवपुरी मे आने बाले लोगों को अभियान से जोड़कर किया जागरुक ।

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी-पुलिस मुख्यालय भोपाल के आदेशानुसार विशेष जागरूकता अभियान ÷अभिमन्यु÷ प्रदेश भर मे चलाया जा रहा है । शिवपुरी पुलिस द्वारा आज दिनांक को पुलिस अधीक्षक शिवपुरी श्री रघुवंश सिंह के निर्देशन, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री प्रवीण कुमार भूरिया एवं डीएसपी महिला सेल श्री प्रशांत शर्मा के मार्गदर्शन एवं महिला थाना प्रभारी उनि. कोमल परिहार के नेतृत्व में शिवपुरी पुलिस द्वारा विशेष जागरूकता अभियान ÷अभिमन्यु÷ के तहत गांधी पार्क एवं मटका पार्क शिवपुरी मे जाकर आमजन से संपर्क कर उन्हें जाकरुक बनाने हेतु समझाइस दी व प्रत्येक पुरुष अभिमन्यु की तरह समाज में हो रही बुराईयों जैसे लिंगभेद, अशिक्षा, भ्रूण हत्या, असंवेदनशीलता, अश्लीलता, रूढ़िवादिता, दहेजप्रथा, नशा आदि के खिलाफ आवाज उठाने हेतु लोगों को समझाइस दी गई । समाज मे महिलाओं पर होने बाले अपराधों मे चुप नहीं रहना चाहिये एवं महिलाओं पर होने बाले अपराधों के खिलाफ खुलकर सामने आना चाहिये । जिससे समाज में महिलाओं एवं बालिकाओं के लिए सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराया जा सके ।

महादुले के लाल ने कर दिया कमाल

समाज का किया प्रदेश मे नाम रोशन

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी – मनियर के रहने वाला स्टूडेंट राज महादुले पुत्र अरुण महादुले ने आईआईटीएडवांस में पहली बार में ही क्वालीफाई कर अपने परिवार और समाज का नाम रोशन किया है राज महादुले पुत्र अरुण महादुले के दादाजी रघुवीर महादुले पूर्व में रिटायर ए एस एल आर थे राज महादुले ने बताया कि उन्होंने कक्षा 12 की परीक्षा के साथ-साथ आईआईटी एडवांस की परीक्षा दी थी और उन्होंने घर पर ही रहकर तैयारी की थी और उन्होंने पहली बार में ही आईआईटीएडवांस में क्वालीफाई किया है जिसका श्रेय उन्होंने अपने दादा रघुवीर महादुले और दादी के साथ पिता अरुण महादुले और माता को दिया है राज महादुले ने 12 वी मे भी जिले मे प्रथम स्थान हासिल किया था

शिवपुरी शहर के 39 वार्डों में 7 क्षेत्र स्तरीय महिला संगठनों का हुआ

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी- शिवपुरी शहर के 39 वार्डों में 7 संगठन का क्षेत्र स्तर पर गठन किया गया है। शिवपुरी शहर में संचालित स्व सहायता समूह से ऊपर बढ़कर महिलाओं ने क्षेत्र स्तरीय संगठन बनाए हैं।नगर पालिका शिवपुरी और जतन उजाला सेवा संस्था के संयुक्त तत्वाधान में शहर के 39 वार्डों में 7 क्षेत्र स्तरीय महिला संगठन सक्रियता से काम कर रहे है जो स्व सहायता समूह की महिलाओं ने मिलकर बनाए हैं अब स्व सहायता समूह की आजीविका को बढ़ाने के लिए संस्था के साथ-साथ संगठन भी सहयोग करेंगे। नगर पालिका से प्रत्येक संगठन को ?50 हजार की सहायता राशि दी जाएगी जो कि अपने समूह को मजबूत करने के लिए उपयोग में लाई जाएगी।सिटी मैनेजर रमेश सिंह ने बताया कि 10 स्व सहायता समूह को मिलाकर एक संगठन बनाया जाता है। इस प्रकार शहर में अभी कुल 7 क्षेत्र स्तरीय महिला संगठन काम कर रहे हैं और एक शहर स्तरीय महिला संगठन का गठन भी किया है जो कि छोटे-छोटे स्व सहायता समूह की बात को रखें और अपने काम को सही अंजाम तक पहुंचाने में दिक्कतों का सामना करते थे अभी संगठन उनकी पूरी मदद करेंगे। साथ ही जतन उजाला सेवा संस्था से अशोक शर्मा ने बताया कि जतन उजाला सेवा संस्था इन महिला संगठनों की ट्रेनिंग करके इनको आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में काम करेगी। संस्था लगातार इनकी मॉनिटर और गतिविधियों को संचालित करने में सहयोग करेगी। रविंद्र सुमन ने बताया कि इन संगठनों की क्षेत्रस्तर पर मीटिंग की जा रही है और इन को मजबूत और प्रशिक्षित कर मुख्यधारा से जोड़ा जाएगा। अभी 3 संगठनों का गठन हुआ है और शहर में चार संगठन पहले से सक्रियता के साथ काम कर रहे हैं कुल मिलाकर अभी 7 महिला क्षेत्र स्तरीय संगठन 39 वार्डों में मनाए गए और इनको शासन की मुख्यधारा से जोड़कर आजीविका को मजबूत करने के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा हैं। प्रशिक्षण के दौरान सभी 39 वार्डों से 75 महिलाये जो कि स्व सहायता समूह की लीडर बहनों ने सहभागिता की। कार्यक्रम में जतन उजाला सेवा संस्था शिवपुरी से आकाश पुरोहित, सलोनी शर्मा, मुकेश शाक्य, मुख्य रूप से उपस्थित हुए।

श्रीमान पुलिस अधीक्षक महोदय श्री रघुवंश कुमार सिंह भदौरिया ,अति.पुलिस अधीक्षक श्री प्रवीण भूरिया,श्री संजय चतुर्वेदी के निर्देश पर

हरिओम चतुर्वेदी।। ब्यूरो।
9009279100

दिनारा थाना प्रभारी संतोष भार्गव एवं चौकी प्रभारी सतीश जयंत ने माननीय न्यायालय करैरा के प्रकरण क्रमांक 192/2015,2333/15,21/22, एवं 10/20 में 08 वर्ष से फरार चल

रहे दो स्थाई वारंट एवं दो गिरफ्तार वारण्ट में रामकिशन पुत्र आशाराम कुशवाह उम्र 43 साल निवासी फुरतला खिरिया पुनावली थाना दिनारा जिला शिवपुरी को*थाना प्रभारी संतोष भार्गव के निर्देशन में आज दिनाक 18/06/2023 को गिरफ्तार कर दिनांक 18/06/2023 को माननीय न्यायालय करेरा में पेश किया जा रहा है *!गिरफ्तार करने वाले थाना प्रभारी संतोष भार्गव चौकी प्रभारी सतीश जयंत स उ नि विवेक भट्ट प्रआर रवि मांझी ,मृत्युंजय सिंह ,आर .रामअवतार सिंह ,अंकित सिंह , की सराहनीय भूमिका रही!

पुलिस थाना पिछोर जिला शिवपुरी ने 3 झगड़ालू बदमाश गिरफ्तार किये व भेजा जेल

राकेश परिहार पिछोर
9691338626

पिछोर, पुलिस अधीक्षक श्री रघुवंश कुमार सिंह भदौरिया, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री प्रवीण कुमार भूरिया व एसडीओपी पिछोर श्री प्रशांत शर्मा के निर्देशन में आदतन अपराधी व असामाजिक तत्वों के विरुद्ध अभियान चल रहा है इसी तारतम्य में थाना पिछोर टीआई गब्बर सिंह गुर्जर के नेतृत्व में पुलिस थाना पिछोर की टीम ने ग्राम मादौन खुर्द में सरकारी जमीन पर कब्जा करने को लेकर झगड़ा कर रहे 3 व्यक्तियों को गिरफ्तार किया जो आपस में झगड़ा कर मरने मारने पर उतारू थे। पार्टी क्रमांक 1के गिरवर लोधी व बलबीर लोधी पार्टी क्रमांक 2 के जगभान लोधी निवासी ग्राम मादौन खुर्द को झगड़ा करने पर धारा 151 जाब्ता फौजदारी गिरफ्तार किया जो झगड़ालू किस्म के व्यक्ति हैं और आए दिन आपस में झगड़ा करते हैं। बदमाशों को एसडीएम कोर्ट पिछोर में पेश किया व एसडीएम कोर्ट ने उप जेल पिछोर भेज दिया है ।पुलिस थाना पिछोर की टीम में एएसआई शैलेंद्र सिंह चौहान ,अरविंद यादव, प्रधान आरक्षक राजेंद्र सिंह यादव , आरक्षक कमल सिंह मांझी की मुख्य भूमिका रही।

निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन 350 से अधिक मरीजो को मिला लाभ

संभागीय ब्यूरो गौरीशंकर कुशवाहा की पुष्पांजली टुडे की खबर

दमोह । मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के मार्गदर्शन में बुन्देलखंड नव निर्माण संगठन एवं युवा जन कल्याण समिति द्वारा निःशुल्क जांच शिविर का आयोजन लक्ष्मनकुटी में किया गया। जिसमें ब्लड सुगर, हेमोग्लोबिन, ब्लॉड प्रेशर, आदि सभी की निःशुल्क जांच करने के साथ मुफ्त दवाइयों का वितरण किया गया। सर्व प्रथम डॉक्टरों द्वारा पूजन अर्चन कर कैम्प का शुभारंभ किया। इस दौरान संरक्षक पं. दिनेश प्यासी ने कहा कि संगठन का संकल्प है कि अब हर घर होगा स्वस्थ और हर घर होगा निरोग। इस कैंप का मुख्य उदेश्य ब्लॉड प्रेशर एवं शुगर के मरीजो को जागरूक करना। दमोह के सुप्रसिद्ध डॉ. राजीव अग्रवाल शासकीय चिकित्सक, डॉ एच.एस सूर्यवंशी शासकीय चिकित्सक, डॉ दिलीप गुप्ता, डॉ. सौरभ चौधरी न्यूरोथेरेपिस्ट, डॉ मयंक शर्मा, डॉ. देवेंद्र उपाध्याय द्वारा मरीजो का इलाज किया। आयोजन समिति द्वारा डॉक्टरों का सम्मान शाल, श्रीफल एवं सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया

महिला एवम बाल विकास विभाग की बड़ी लापरवाही वर्षों बीत जाने पर आज भी नही हुई नियुक्तियां

संभागीय ब्यूरो गौरीशंकर कुशवाहा
पुष्पांजली टुडे

विभाग के ढल मल रवैए को देखते हुए समाजवादी पार्टी युवजन महासभा के प्रदेश उपाध्यक्ष सोनेलाल प्रजापति ने जिला कलेक्टर के नाम सौंपा ज्ञापन कहा जल्द की जाएं गुनौर परियोजना अंतर्गत नियुक्तियां

गुनौर- महिला एवं बाल विकास विभाग के ढल मल रवैया को देखते हुए समाजवादी पार्टी युवजन सभा के प्रदेश उपाध्यक्ष सोनेलाल प्रजापति द्वारा कलेक्टर पन्ना के नाम ज्ञापन सौंपा है जिसमें उल्लेख किया गया है की कार्यालय एकीकृत बाल विकास परियोजना गुनौर द्वारा फरवरी 2022 में गुनौर परियोजना अंतर्गत रिक्त पदों हेतु विज्ञापन जारी किया था जिस विज्ञापन के तहत विभिन्न आंगनवाड़ी केंद्रों में आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, सहायिका, मिनी कार्यकर्ता हेतु फार्म डाले गए थे इसके बाद 02/09/2022 को पुनः गुनौर परियोजना में विभिन्न रिक्त पदों हेतु विज्ञापन जारी किया गया जिसके तहत आवेदन आमंत्रित किए गए इसके बावजूद भी 2 विज्ञापनों की भर्ती की लिस्ट आज भी गुनौर महिला बाल विकास परियोजना जारी नहीं कर पाया इससे विभाग की बड़ी लापरवाही प्रदर्शित होती है और यह गंभीर लापरवाही है नियमानुसार यह कार्यवाही आवेदन जमा करने की लास्ट डेट से 15 दिवस के अंदर पूरी भर्ती प्रक्रिया हो जानी चाहिए जो की वर्षो तक भर्ती प्रक्रिया पूर्ण नही हो पाई है ज्ञापन के माध्यम से मांग की है कि जब गुनौर महिला बाल विकास परियोजना द्वारा पहले विज्ञापन की भर्ती लिस्ट जारी

नहीं की गई तो पुनः दूसरा विज्ञापन जारी करके करके रिक्त पदों हेतु विज्ञापन जारी कर आवेदन आमंत्रित किए गए जिसकी लिस्ट आज दिनांक तक प्रकाशित नहीं हो पाई है जबकि बरसों बीत रहे हैं कलेक्टर महोदय जिला पन्ना से ज्ञापन के माध्यम से मांग की है कि गुनौर परियोजना अंतर्गत रिक्त पदों हेतु भर्ती जो अधहर में लटकी है उसको तत्काल 7 दिवस के अंदर भर्ती की लिस्ट को प्रकाशित कराएं 7 दिवस के अंदर लिस्ट प्रकाशित ना होने पर मामला माननीय उच्च न्यायालय के संज्ञान में ले जाने हेतु ज्ञापन दाता विवश रहेंगे और आगामी दिनों मुख्यमंत्री का दौरा गुनौर विधानसभा अंतर्गत 21 जून को कार्यक्रम प्रस्तावित है अगर उससे पहले लिस्ट जारी नही होती है तो मुख्यमंत्री का काले झंडे दिखाकर विरोध किया जाएगा।

अंतर्राज्यीय चोर गिरोह के सक्रिय सदस्यों को पन्ना पुलिस द्वारा डकैती की योजना बनाते समय किया गया गिरफ्तार

संभागीय ब्यूरो गौरीशंकर कुशवाहा
पुष्पांजली टुडे की खबर

मामले में 05 आरोपी गिरफ्तार, पूँछताछ पर पन्ना जिले के अलग-अलग थाना क्षेत्रों के 15 प्रकरणों में 23 घरों की चोरियों में शामिल होने का खुलासाआरोपियों के कब्जे से 02 अवैध कट्टा कीमती करीब 20 हजार रूपये, 02 जिन्दा कारतूस, 02 बका, 01 लोहे का ताला काटने वाला कटर, चोरी किये गये सोने चाँदी के जेवरात कीमती करीब 6 लाख 25 हजार रूपये , 01 ट्रैक्टर कीमती करीब 06 लाख रूपये कुल मशरूका कीमती करीब 12 लाख 45 हजार का जप्तआरोपियों के विरूद्ध म.प्र. में पन्ना जिले के अलावा छतरपुर, सतना एवं उ.प्र. के महोबा, झाँसी, नोयडा जिलों के अलग-अलग थानों में करीब 66 प्रकरण दर्ज ह

घटना का संक्षिप्त विवरण – दिनांक 17/06/23 की दरम्यानी रात्रि को थाना प्रभारी अजयगढ़ निरीक्षक हरी सिंह ठाकुर को मुखबिर द्वारा सूचना प्राप्त हुई कि 05 संदेही व्यक्ति जैतूपुर तिराहा में झाड़ियों के पीछे छिपे बैठे हैं । जो बागरी पेट्रोल पंप किशनपुर, अजयगढ़ में डकैती डालने की योजना बना रहे हैं ।

पुलिस द्वारा की गई कार्यवाही - थाना प्रभारी अजयगढ़ निरीक्षक हरी सिंह ठाकुर द्वारा तत्काल वरिष्ठ अधिकरियों को सूचना से अवगत कराया गया । पुलिस अधीक्षक पन्ना श्री धर्मराज मीना द्वारा घटना को गंभीरता से लेते हुये तत्काल अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक पन्ना श्रीमति आरती सिंह व अनुविभगीय अधिकारी पुलिस अजयगढ़ श्रीमती कल्याणी वरकडे के मार्गदर्शन एवं थाना प्रभारी अजयगढ़ निरीक्षक हरी सिंह ठाकुर, थाना प्रभारी धरमपुर उनि श्री कृष्ण मावई, चौकी प्रभारी बीरा उनि भानु प्रताप सिंह चौहान के नेतृत्व में 03 अलग-अलग पुलिस टीमों का गठन किया गया । पुलिस अधीक्षक पन्ना द्वारा पुलिस सायबर सेल टीम को सहायतार्थ गठित पुलिस टीमों के साथ शामिल किया जाकर जानकारी एकत्रित किये जाने के निर्देश दिये गये । पुलिस अधीक्षक पन्ना के निर्देशानुसार मुखविर सूचना की तस्दीक हेतु गठित पुलिस टीमों द्वारा मुखबिर के बताये स्थान पर पहुँची तो देखा कि 05 व्यक्ति जैतूपुर तिराहा के पास झाड़ियों के पीछे बैठे हैं, जैसे ही उक्त व्यक्तियों ने पुलिस टीमो अपने पास आते हुये देखा तो मौके से भागने की कोशिस करने लगे । पुलिस टीमो द्वारा घेराबंदी कर मौके से सभी 05 आरोपियों को पुलिस अभिरक्षा में लिया गया । पुलिस टीम द्वारा संदेहियों से नाम पता पूँछकर उक्त सभी संदेही व्यक्तियों की तलाशी ली गई तो आरोपियों के कब्जे से घटना कारित करने हेतु 02 अवैध कट्टा, 02 जिन्दा कारतूस, 02 बका एवं ताला काटने हेतु लोहे का एक कटर बरामद हुआ जिसे पुलिस टीम द्वारा मौक से जप्त किया गया । इसके बाद पुलिस द्वारा सभी आरोपियों से कड़ाई से पूँछताछ किये जाने पर आरोपियों द्वारा पन्ना जिले के अलग-अलग थानो में दर्ज कुल 15 प्रकरणों में 23 घरों में चोरी करने की वारदात को स्वीकार किया गया । जिसके

संबंध में पुलिस द्वारा विस्तार से पूँछताछ किये जाने पर आरोपियों द्वारा थाना अजयगढ़ के अप.क्र. 11/22, 63/22, 115/22, 412/22, 614/22, 615/22, 117/23, 124/23, 233/23, 241/23, 243/23 , थाना धरमपुर के अप.क्र. 207/22 , थाना कोतवाली पन्ना के अप.क्र. 177/23, 181/23 एवं थाना बृजपुर के अप.क्र. 10/23 में चोरी किये जाने की बात को स्वीकार किया गया । पुलिस टीमों द्वारा आरोपियों के बताये अनुसार आरोपियों के कब्जे से उक्त चोरियों में चोरी किया गया मशरूका सोने के जेवरात वजनी करीब 57 ग्राम कीमती करीब 03 लाख 95 हजार, चाँदी के जेवरात वजनी करीब 2 किलो 700 ग्राम कीमती करीब 2 लाख 30 हजार, 01 ट्रैक्टर कीमती करीब 06 लाख रूपये का जप्त किया गया । पुलिस टीमो द्वारा एक बड़ी घटना को घटित होने से पूर्व आरोपियों को गिरफ्तार किया जाकर महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त की गई है । आरोपियों के विरूद्ध थाना अजयगढ में डकैती की योजना बनाने एवं अवैध शस्त्र लिये पाये जाने पर अपराध क्रमांक 259/23 कायम कर आरोपियों को गिरफ्तार किया जाकर माननीय न्यायालय पेश किया गया है । गिरफ्तार आरोपियों को पुलिस रिमाण्ड में लिया जाकर पूँछताछ पर चोरी के अन्य मामलों में खुलासा होने की पूर्ण संभावना है । उक्त सभी आरोपी एक अंतर्राज्यीय चोर गिरोह के सक्रिय सदस्य है आरोपियों के विरूद्ध पन्ना जिले के अलावा छतरपुर, सतना एवं म.प्र. के बाहर उ.प्र. के महोबा, झाँसी, नोयडा में कुल 66 आपराधिक प्रकरण दर्ज है । अन्य जिलो में भी आरोपियों द्वारा चोरी की वारदातो को अंजाम दिया गया है जिसकी जानकारी एकत्रित की जा रही है ।

गिरफ्तार आरोपी ङ्क05 आरोपी गिरफ्तार आरोपियों का आपराधिक रिकार्ड - आरोपियों के विरूद्ध पन्ना जिले के अलग-अलग थानो में कुल 31, छतरपुर जिले में कुल 11, नागौद सतना में 01, उ.प्र. के नोयडा थाना में 10, महोबकण्ठ जिला महोबा उ.प्र. में 06, थाना कोतवाली महोबा में 05, थाना मऊरानीपुर जिला झाँसी में 02 आपराधिक प्रकरण कायम होने की जानकारी मिली है । अन्य जिलों एवं राज्यों से भी आरोपियों के आपराधिक रिकार्ड की जानकारी मंगाई जा रही है ।

सराहनीय योगदान - उक्त सम्पूर्ण कार्यवाही में थाना प्रभारी अजयगढ़ निरीक्षक हरी सिंह ठाकुर, थाना प्रभारी धरमपुर उनि श्री कृष्ण मावई, चौकी प्रभारी बीरा उनि भानु प्रताप सिंह चौहान, चौकी प्रभारी चन्दौरा उनि रामगोपाल द्विवेदी, चौकी प्रभारी हनुमतपुर उनि गिरजाशंकर बाजपेयी, सउनि आर.डी. अहिरवार, पुलिस सायबर सेल टीम पन्ना से प्र.आर. नीरज रैकवार, राहुल सिंह बघेल, आर. आशीष अवस्थी, धर्मेन्द्र सिंह राजावत, राहुल पाण्डेय एवं पुलिस टीम में शामिल प्र.आर. अइमात सेन, संतोष तोमर, वृषकेतु रावत, शंकर प्रताप सिंह, आर. खेमचन्द राय, भूरी सिंह, नरेन्द्र अहिरवार, अजीत यादव, बृजेश, मनोज पटेल, शिवप्रताप सिंह, अश्वनी अनुरागी, अमित द्विवेदी,दिनेश अवस्थी, नीरज, विजय का सराहनीय योगदान रहा है पुलिस अधीक्षक पन्ना द्वारा उक्त पुलिस टीम को 5000 रूपये के ईनाम से पुरुस्कृत किये जाने की घोषणा की गई है ।

जप्त सामग्री आरोपियों के कब्जे से 02 कट्टा कीमती करीब 20 हजार रूपये, 02 जिन्दा कारतूस, 02 बका , सोने के जेवरात वजनी करीब 57 ग्राम कीमती करीब 03 लाख 95 हजार , चाँदी के जेवरात वजनी करीब 2 किलो 700 ग्राम कीमती करीब 2 लाख 30 हजार , 01 ट्रैक्टर कीमती करीब 6 लाख रूपये कुल मशरुका कीमती करीब 12 लाख 45 हजार रूपये का जप्त ।

पन्ना पुलिस द्वारा गुमे हुये कुल 141 मोबाइल कीमती करीब 17 लाख रूपये के खोजे जाकर मोबाइल स्वामियों को किये जा रहे वापस

संभागीय ब्यूरो गौरीशंकर कुशवाहा की पुष्पांजली टुडे की खबरगुमे हुये मोबाइलो को पाकर मोबाइल स्वामियों के चेहरे खिले, पुलिस अधीक्षक पन्ना एवं पन्ना पुलिस सायबर सेल टीम को दिया धन्यवाद

पुलिस अधीक्षक पन्ना के प्रयासो के फलस्वरूप पन्ना पुलिस द्वारा वर्ष 2023 में कुल 256 मोबाइल कीमती करीब 28 लाख 50 हजार के खोजे जाकर मोबाइल स्वामियों को किये गये वापसउपपुलिस महानिरीक्षक छतरपुर श्री ललित शाक्यवार एवं पुलिस अधीक्षक पन्ना श्री धर्मराज मीना द्वारा पुलिस सायबर सेल टीम पन्ना को कार्यालय में प्राप्त आवेदनो के आधार पर गुम मोबाइलों को खोजे जाने हेतु निर्देशित किया गया था। पुलिस अधीक्षक पन्ना के निर्देशानुसार पुलिस सायबर सेल टीम पन्ना द्वारा गुमे हुये मोबाइलो के बारे में जानकारी एकत्रित की गई। प्राप्त जानकारी के आधार पर पुलिस सायबर सेल टीम पन्ना द्वारा संबंधित थानो को जानकारी साझा करते हुये थानो में पदस्थ पुलिस अधि0/कर्मचारियों की मदद से गुमे हुये कुल 141 मोबाइल कीमती करीब 17 लाख रूपये के खोजे गये हैं। खोजे गये मोबाइल पुलिस अधीक्षक पन्ना के निर्देशानुसार पुलिस सायबर सेल टीम द्वारा संबंधित मोबाइल स्वामियों को वितरित किये जायेंगें। पूर्व में भी पन्ना पुलिस द्वारा गुमे हुये मोबाइलो को खोजकर मोबाइल स्वामियों को वितरित किये जा चुके हैं। पन्ना पुलिस द्वारा गुम हुये मोबाइलो में से इस वर्ष कुल 256 मोबाइल कीमती करीब 28 लाख 50 हजार रूपये के खोजे गये है। गुमे हुये मोबाइलो को खोजने में पुलिस सायबर सेल टीम पन्ना से प्र.आर. नीरज रैकवार, राहुल सिंह बघेल, आर. आशीष अवस्थी, धर्मेन्द्र सिंह राजावत, राहुल पाण्डेय एवं पन्ना जिले के थानो में पदस्थ पुलिस अधिकारी / कर्मचारियों का विशेष योगदान रहा है।

141 मोबाइल खोजे जाने पर पुलिस अधीक्षक पन्ना द्वारा पुलिस सायबर सेल टीम की प्रशंसा की गई है।

खोजे गये मोबाइलो के वास्तविक उपयोगकर्ताओ की सूची निम्न अनुसार है ङ्क

क्रमांक	नाम	पता
1	आकाश गुप्ता	इन्द्रपुरी कॉलोनी पन्ना
2	राजेश साहू	सलेहा
3	तोसीफ अहमद बख्सी	पन्ना
4	कमलकिशोर चित्रकार	किशोर जी मंदिर के पास पन्ना
5	पुष्पेन्द्र सिंह	बेनीसागर पन्ना
6	चंचल साहू	पन्ना
7	राकेश सिंह यादव	लुहरहाई पहाड़ीखेरा
8	धीरज गुप्ता	बड़ा बाजार पन्ना
9	पुष्पेन्द्र कुमार लोधी	माधोगंज
10	मीना साहू	शाहनगर
11	यशवंत कुमार शर्मा	पन्ना
12	विनोद कुशवाहा	आगरा मोहल्ला पन्ना
13	टिंकू खान	रानीगंज पन्ना
14	सतीश कुमार प्रजापती	सारंगपुर शाहनगर
15	शिवम रैकवार	ककरहटी
16	कमलेश खरे	पन्ना
17	राम विश्वास	जिगदहा देवेन्द्रनगर
18	नरेश मिश्रा	गुनौर
19	बृजेश शर्मा	सलेहा
20	कैलाश गुप्ता	गुल्लायची पन्ना
21	धनश्याम अहिरवार	बराछ पन्ना
22	ज्ञान सिंह	शाहनगर
23	शुभेन्द्र चौरसिया	धाम मोहल्ला पन्ना
24	सुखराम सिंगरौल	पवई
25	रघुनाथ सिंह	छत्रासाल नगर छतरपुर
26	विजय कुमार शर्मा	गुनोर
27	दीपा सिंह पटेल	देवेन्द्रनगर
28	बसंत यादव	पडेरी गुनौर
29	प्रकाश गुप्ता	कछयाना अजयगढ़
30	पुरषोत्तम रैकवार	अजयगढ़
31	गुड्डा चोधरी	कुआंताल सिमरिया
32	सरजु प्रसाद कुशवाहा	देवेन्द्रनगर
33	आसाराम अहिरवार	देवेन्द्रनगर
34	गंगादीन चौधरी	भिलसांय देवेन्द्रनगर
35	सुंदरम राजा	बरेठी भगवा बृजपुर
36	दुर्ग सिंह	पवई
37	राजकुमार वर्मा	जैतुपरा सलेहा
38	मुन्ना लोधी	सलेहा
39	उपेन्द्र कुमार वर्मा	देवेन्द्रनगर
40	आनन्द कुमार मिश्रा	बिरवाही देवेन्द्रनगर
41	अमित कुशवाहा	बडा बाजार पन्ना
42	सुरेश कुमार नायक	देवेन्द्रनगर
43	प्रशांत चतुर्वेदी	पन्ना
44	रमेश सिंह	रानीगंज पन्ना
45	सुभाष कुमार गुप्ता	शाहनगर
46	तीरथ सिंह	गुनौर
47	राजेश कुमार जैन	रैपुरा
48	राजेश कुशवाहा	सिमरिया
49	केशपाल चोधरी	पिपरिया कला गुनौर
50	प्रतिभा कुशवाहा	पन्ना
51	सूरज गोण्ड	पुरषोत्तमपुर पन्ना
52	नितिन कुमार लोधी	पन्ना
53	सोनू कुशवाहा	बडागांव देवेन्द्रनगर
54	अंकु कुशवाहा	अस्पताल चौराहा पन्ना
55	अमित सिंह	हरदुआ पन्ना
56	सनी सिंह यादव	पन्ना
57	राजेश मिश्रा	सरवई छतरपुर
58	आर. पवन ब्राम्हणे	पुलिस लाइन पन्ना
59	लोकपाल चौधरी	गुनौर
60	आर. रामप्रकाश पाल	पुलिस लाईन पन्ना
61	लल्लू अहिरवार	पतापुर अजयगढ़
62	ब्रजेशराज शर्मा	धाम मोहल्ला पन्ना
63	मन्जु खान	सीरी अमानगंज
64	नीतेश प्रजापती	मोहन्द्रा
65	रामलखन तिवारी	गुनौर
66	गायत्री प्रजापती	अजयगढ़
67	गजेन्द्र सिंह	गुनौर
68	कृष्ण कुमान चौबे	सिली गुनौर
69	विजय राजपूत	देवेन्द्रनगर
70	देवीदीन सिंह परमार	सलेहा
71	चन्द्र प्रताप दुबेदी	शाहनगर
72	प्रतिपाल सिंह यादव	बृजपुर
73	भागचन्द्र पटेल	देवरी सिमरिया
74	राजकुमार आदिवासी	अमानगंज
75	भइया राजा	गिड़मनिया सिमरिया
76	मुकेश सेन	पवई
77	रजनीकांत सौर	रामपुर अमानगंज
78	राधा वर्मन	पन्ना
79	राजेन्द्र प्रसाद कुशवाहा	सतना
80	सुमन्ती बाई चौधरी	अमानगंज
81	भागीरथ साहू	पगरा गुनौर
82	रामसजीवन ढीमर	कौआसेहा पन्ना
83	जीतेन्द्र राजपूत	सनोरा अमानगंज
84	तेज प्रताप प्रजापती	देवेन्द्रनगर
85	अरविंद तिवारी	करिया सिमरिया
86	भागचन्द्र चौधरी	बृजपुर
87	जगतदेव विश्वकर्मा	बमुरी देवेन्द्रनगर
88	भोला अहिरवार	बरियारपुर अजयगढ़
89	आर. सुमेर सिंह	थाना यातायात पन्ना
90	श्रीपाल अहिरवार	किशनगढ़ छतरपुर
91	पूरन लाल साहू	देवेन्द्रनगर
92	बबलु प्रजापति	बृजपुर
93	वीरेन्द्र खटीक	रानीगंज पन्ना
94	भुपेन्द्र सिंह यादव	देवेन्द्रनगर
95	कुनाल रैकवार	रानीगंज पन्ना
96	आशीष मिश्रा	पन्ना
97	संतोषी गोण्ड	गहरा पन्ना
98	विनोद चौधरी	रामगढ़ा शाहनगर
99	शिवम मिश्रा	सलेहा
100	अरविंद विश्वकर्मा	बेनीसागर पन्ना
101	लालमनी लोध	सलेहा
102	शिवम बाल्मीकि	पवई
103	धर्मेन्द्र सिंह पवई	104 शुभम किशोर गर्ग देवेन्द्रनगर
105	सुरेश कुमार रजक	पन्ना
106	इन्द्र प्रसाद लोधी	पडवार सिमरिया
107	अमरजीत वर्मन	सलेहा
108	लतीफ अहमद	पवई
109	एम के दोहरे	मोहनपुरवा पन्ना
110	मदन कोरी	पन्ना
111	सुनील कुमार पटेल	पन्ना
112	प्रशांत सिंह परिहार	पवई
113	महेश यादव	कुंवरपुर अजयगढ़
114	दीप सिंह	धरमपुर
115	दिलीप अहिरवार	मड़वा रैपुरा
116	समरजीत सिंह राजपूत	ककरहटी
117	जुलेखा खातुन	आगरा मोहल्ला पन्ना
118	सरमन	राजगोंड बृजपुर
119	मुकेश गुप्ता	अजयगढ़
120	कुश तिवारी	पन्ना
121	राजु रैकवार	गुनौर
122	इन्द्रपाल कुशवाहा	पन्ना
123	जनपद सिंह	सलेहा
124	रामकिशुन कोरी	देवेन्द्रनगर
125	पवन कुमार मिश्रा	सलेहा
126	अरविंद लोध	अजयगढ़
127	अखण्ड प्रताप सिंह	पन्ना
128	रंजना पाठक	सलेहा
129	प्यारेलाल लोधी	सिमरिया
130	नसरत अली	पन्ना
131	विजय कुमार सोनी	शाहनगर
132	नरेन्द्र सिंह यादव	रनवाहा देवेन्द्रनगर
133	शिवम सिंह	अमानगंज
134	देवेन्द्र दीक्षित	इटवॉ खास
135	भागचन्द्र जोशी	धाम मोहल्ला पन्ना
136	बटोला यादव	
137	अमिताभ जैन	पन्ना
138	लोकेन्द्र सिंह	खलपुरा गुनौर

नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन 350 से अधिक मरीजो को मिला लाभ

दिलीप गुप्ता, डॉ. सौरभ चौधरी — इस तरह के आयोजन से माध्ययम

संभागीय ब्यूरो गौरीशंकर कुशवाहा की पुष्पांजली टुडे की खबर दमोह। मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के मार्गदर्शन में बुन्देलखंड नव निर्माण संगठन एवं युवा जन कल्याण समिति द्वारा नि:शुल्क जांच शिविर का आयोजन लक्ष्मनकुटी में किया गया। जिसमें ब्लड सुगर, हेमोग्लोबिन, ब्लॉड प्रेशर, आदि सभी की नि:शुल्क जांच करने के साथ मुफ्त दवाइयों का वितरण किया गया। सर्व प्रथम डॉक्टरों द्वारा पूजन अर्चन कर केम्प का शुभारंभ किया। इस दौरान संरक्षक पं. दिनेश प्यासी ने कहा कि संगठन का संकल्प है कि अब हर घर होगा स्वस्थ और हर घर होगा निरोग। इस कैंप का मुख्य उदेश्य ब्लॉड प्रेशर एवं शुगर के मरीजो को जागरूक करना। दमोह के सुप्रसिद्ध डॉ. राजीव अग्रवाल शासकीय चिकित्सक, डॉ एच.एस सूर्यवंशी शासकीय चिकित्सक, डॉ न्यूरोथेरेपिस्ट, डॉ मयंक शर्मा, डॉ. देवेंद्र उपाध्याय द्वारा मरीजो का इलाज किया। आयोजन समिति द्वारा डॉक्टरों का सम्मान शाल, श्रीफल एवं सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया। इस कैंप को सफल बनाने मे कैनेडियन सोलर का सहयोग रहा। दीपक राजपूत ने बताया कि इस केम्प में 350 से अधिक मरीजो का परीक्षण चिकित्सको द्वारा किया गया और वर्ग को बहुत लाभ मिलता है इसे आयोजन होते रहने चाहिए। सभी का आभार जिला संगठन प्रभारी निर्मल राठौर ने व्यक्त किया। शिविर को सफल बनाने में लोकेश राजपूत, सुनील सिंघई, अंकित बसेडिया, निर्मल राठौर, पुष्पेंद्र पटेल, जय कुमार, शीतल रजक, राहुल खरे, दिप्पू, हरगोविंद साहू, राजू पटेल, राकेश राठौर एवं मंदिर समिति का सहयोग रहा

लाड़ली बहनो में खुशी का माहोल राशि पाकर बहनो की कहानी उन्ही की जुबानी

पुष्पांजली टुडे दमोह। लाड़ ली बहनो के लिए मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा मुख्यमंत्री लाढली बहना योजना शुरू की गई है जो अभी एक हजार रूपये डाले गये है, धीरे-धीरे बढाकर 3 हजार रूपये की जायेगी। इस योजना से लाड़ ली बहनो में खुशी का माहौल है। महिलाओं से चर्चा करने पर उनके चेहरे पर खुशी देखते ही बनती है। महिलाएं इस राशि के उपयोग के बारे में कुछ बहने कहती है बच्चो की फीस भरें है, तो कुछ बच्चो के लिए कापी-किताब लेने और कुछ दैनिक जरूरतो के लिए खर्च करने की बात कर रही है महिलाएं यह भी कह रही है। अभी तो शुरूआत है, हमारे लाढले भैया मुख्यमंत्री इस एक हजार की राशि को आगे बढाते हुए 3 हजार रूपये करेंगे। सुनिये बहनो की कहानी उनकी ही जुबानी।गिरजा कहती है जो भी अच्छा लगेगा खरीदेंगे जिले के ग्राम पंचायत वारी निवासी गिरजा कहती है खाते में एक हजार रूपयं आ गयं है। वे खुशी-खुशी कहती है जो कुछ अच्छा लगेगा इन पेसो से लेंगे। वे इसके लिये मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद दे रही है और कहती है ऐसे ही हमारे बच्चो को अच्छी शिक्षा दे और आगे ऐसे ही अच्छी योजनाएं लाते रहे और अच्छे काम करते रहे। गिरजा बाई कहती है हमारे लिए और बच्चों के लिए, बेटियों के लिए अच्छी योजनाएं सरकार चला रही है। जो राशि एक हजार मिल रही है और आगे बढकर 3 हजार रूपये तक जायेगी यह हमारे लिए परिवार के विकास के लिए लाभ दायक होगी।ललज्योति लाढली बहना योजना में राशि मिलने से खुशलल जिले की तहसील हटा के रामगोपाल जी वार्ड निवासी ज्योति वर्मा कहती हैं मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने लाड़ली बहना योजना निकाली है इसके अंतर्गत मुझे एक हजार रूपये की राशि प्राप्त हो चुकी है, जिसका उपयोग मैंने अपने घरेलू कार्य में किया है। इसके लिए ज्योति मुख्यमंत्री का सहृदय धन्यवाद दे रही है। शिक्षा पर मिली राशि खर्च कर रही हैललजिले के हटा निवासी वर्षा तंतवाय कहती है, मुझे मामा शिवराज सिंह चौहान की लाड़ली बहना योजना के तहत एक हजार रूपये प्राप्त हुए हैं, इन पैसों को मैं अपने बच्चों की पर खर्च करूंगी। वर्षा मुख्यमंत्री मामा को सहृदय धन्यवाद कह रही हैं। कहती है आगे राशि बढकर 3 हजार रूपये तक होगी, यह राशि परिवार के लिए बहुत सहायक होग लाड़ ली बहना योजना से मिली राशि से ममता ने भरी बच्चो की स्कूल फीसललदमोह के सिविल वार्ड नंबर 6 निवासी ममता रैकवार कहती है मुख्यमंत्री लाड़ली योजना के एक हजार रूपये खाते में आ चुके हैं। वे कहती हैं मैंने खाते से पैसे निकाल कर बच्चों की फीस भर दी है। इसके लिये वे मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को धन्यवाद दे रही हैं।

श्रेयस तलपड़े फिर जीता दर्शकों का दिल, अब इस अंदाज में आए नजर

नई दिल्ली। बॉलीवुड एक्टर श्रेयस तलपड़े जब भी पर्दे पर आते हैं वह दर्शकों का दिल जीतने में कभी कोई कसर नहीं छोड़ते. अब एक बार फिर से उन्होंने अपनी हाल ही में रिलीज हुई शॉर्ट फिल्म %स्पीड डायल% में कर दिखाया है. श्रेयस ने अपने इस किरदार को इतनी खूबसूरती से पर्दे पर उतारा कि दर्शक उनके फिर दीवाने हो गए हैं। अपनी इस लघु फिल्म के बारे में बात करते हुए श्रेयस ने एक इंटरव्यू में कहा है कि %स्पीड डायल% उस आदमी के बारे में प्यारी, मजाकिया, विचित्र लघु फिल्म है, जो एक जादुई फोन ढूंढता है और उसके साथ जादुई चीजें करता है। अभिनेता ने बताया, ५ हम विभिन्न कारकों से किसी प्रकार की पुष्टि या समर्थन की तलाश में रहते हैं. बच्चों और यहां तक कि वयस्कों के रूप में, हम इन समर्थन तंत्र या कुछ जादू की तलाश करते रहते हैं हमारे जीवन में ये सब होता है, जिसकी मदद से हम चीजों को थोड़ा आसान और जिस तरह से हम चाहते हैं वैसा बनाने की कोशिश करते है। गौरतलब है कि श्रेयस तलपड़े के अभिनय से इस फिल्म का निर्देशन कुशल श्रीवास्तव ने किया है. %स्पीड डायल% में अक्ष परदासनी भी अहम किरदार में हैं. इसे रात 8 बजे प्रीमियम ब्लैक म्यूजिक सीडी द्वारा निर्मित किया गया है।

प्रिया अहूजा ने तारक मेहता शो पर वापसी को लेकर दिया ये बड़ा बयान

सीरियल तारक मेहता से रीटा रिपोर्टर काफी लंबे समय से गायब है, जिसे लेकर एक फैंस ने उनसे सवाल किया है कि आप काफी लंबे समय से शो से क्यों गायब है तो उन्होंने जवाब देते हुए बहुत कुछ कहा है। उनसे सवाल किया गया है कि आप काफी लंबे समय से गायब क्यों है और आपके सेट पर गलत तरह से बर्ताव किया जाता है उसे लेकर आप क्या कहेंगी. जिसपर रीटा रिपोर्टर ने जवाब दिया है. रीटा ने जवाब देते हुए कहा है कि असित कुमार मोदी और जतिन भाई मेरे छोटे भाई जैसे हैं। प्रिया ने आगे कहा कि जब मालवा ने शो छोड़ा तो आसित भाई को मैसेज किया, कई बार ये पूछने के लिए कि मेरा ट्रैक क्या है , आगे उसने बताया कि असित मोदी ने शो छोड़ने वाले व्यक्ति को कई बार फोन किया है कि आगे क्या करना है, रीटा ने बताया कि मैंने सोहिल को फोन करके बताया कि असित जी ने मुझे ट्रैक करने की कोशिश किया है, हालांकि मैं अभी उन्हें कोई रिप्लाई नहीं दी हूं। साथ ही प्रिया ने जेनिफर मिस्त्री की भी तारीफ की की वह सेट पर सबका ध्यान रखती थीं, कैसे वह सबके लिए खड़ी रहती थीं।

अच्छे विषय पर बनी लचर फिल्म

लगभग पूरे देश में हर गांव के तमाम पुरूष शहरों में अकेले रहकर नौकरी करते हुए धन कमाने के लिए प्रयासरत नजर आते हैं.इनकी पत्नियां गांव में रहती हैं और अपने पतियों के आने का इंतजार करती रहती हैं.पुरूष हो या औरत,यौन सुख सभी की शारीरिक जरुरत है। पुरूष शहर में रहते हुए छोटी नौकरी करने की वजह से जल्दी गांव नहीं जा पाते.पुरूष अपनी पत्नियों को पैसे भेजकर अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैंपर औरतें पति के प्यार व सैक्स की भूखी रह जाती है.पुरूष शहरों में वह अपनी सैक्स की भूख वेश्याओं के पास जाकर पूरी कर लेते हैंपर बेचारी गांव में रह रही पत्नियां अपनी सैक्स की भूख कैसे मिटाए?

यदि वह मजबूरन अपनी शरीर की इस जरुरत को गांव के किसी मर्द से पूरा करती हैं,तो उन पर बदचलन होने का आरोप लगता है.इसी मूल मुद्दे पर फिल्मकार प्रकाश सैनी फिल्म 'चार लुगाई'लेकर आए हैं.

कहानी -

फिल्म की कहानी ऊषा (निधि उत्तम), रश्मि (मानसी जैन), मीनू (दीप्ति गौतम) और रंजू (कमल शर्मा) की है जो कि मथुरा स्थित पानीगांव नामक गांव में एकदूसरे की पड़ोसी हैं. इन चारों के पति मुंबई में नौकरी करते हैं और सालदो साल घर नहीं आते हैं, जिसकी वजह से इन चारों की शारीरिक जरूरतें पूरी नहीं हो पाती हैं। अपने सासससुर की प्यारी उषा ने अपनी शारीरिक जरुरतों को पूरा करने के लिए गांव के एक युवक डुग्गू (अभिनव सीशोर) को फांस रखा है.डुग्गू का रोमांस गांव के डाक्टर रस्तोगी (ब्रजेंद्र काला) की बेटी संग भी चल रहा है.यह बात रंजू को पता चल जाती है.तब एक दिन रंजू, रश्मि और मीनू को बताती है कि हम सभी की शारीरिक जरूरतें पूरी नहीं होती है। अब रश्मि और मीनू फैसला करती हैं कि वह भी ऊषा को बोलकर डुग्गू के जरिए अपनी जरूरतें पूरी करेंगी। एक दिन जब सभी लोग गांव के प्रधान के भाई की शादी में चले जाते हैंतो उसी रात ऊषा,डुग्गू को घर पर बुलाती है और बताती है कि उसे अब उसके अलावा रश्मि और मीनू की भी जरूरतें पूरी करनी होगी। डुग्गू,ऊषा के नजदीक पहुंचता है कि बिजली चली जाती है और धड़ाम से गिरने की आवाज आती है. जब लाइट आती है तो इन चारों सहेलियों को पता चलता है कि डुग्गू की मौत हो चुकी है। रश्मि अपने आकर्षण का उपयोग करके डा. रस्तोगी (बृजेंद्र काला) को शरीर को ठिकाने लगाने में मदद करने के लिए मना लेती है.फिर पुलिस इंस्पेक्टर संतोष (सानंद वर्मा) अपराध की जांच शुरू करते हैं।

कच्चे लिम्बू : नाम के अनुरूप फिल्म भी कच्ची

भारतीय सिनेमा जगत में क्रिकेट आधारित कई फिल्में बन चुकी हैंमगर यदि हम एम एस धोनी पर बनी फिल्म 'एम एस धोनी - अन टोल्ड स्टोरी' को नजरंदाज कर दें तो क्रिकेट के खेल पर आधारित फिल्मों को सफलता नसीब नही हुई है। अब फिल्मकार शुभम योगी 'गली क्रिकेट' के कांसेप्ट और भाईबहन के प्यार को रेखांकित करने वाली मध्यमवर्गीय परिवारों की कहानी 'कच्चे लिंबू' लेकर आए हैं,जो कि अपने नाम के अनुरूप कच्ची ही रह गई है। लेखक व निर्देशक दोनों इसे सही ढंग से बना नही पाए.बहरहाल, यह फिल्म 19 मई से ओटीटी प्लेटफार्म 'जियो सिनेमा'' पर स्ट्रीमहुईचुकी है। फिल्म की कहानी के केंद्र में मध्यमवर्गीय नाथ परिवार की पिता की आज्ञाकारी बेटी अदिति (राधिका मदान) और बड़ा बेटा आकाश नाथ (रजत बरमेचा) हैं। आकाश नाथ केवल क्रिकेट के दीवाने हैं और अपनी गली के गली क्रिकेट के स्टार हैं. सोशल मीडिया पर आकाश की टीम,आकाश और उसकी टीम के खिलाड़ी, कबीर सेन (आयुष मेहरा) छाए रहते हैं।

सिनेमा की पटरी पर भी दौड़ती रही हैं कहानियां

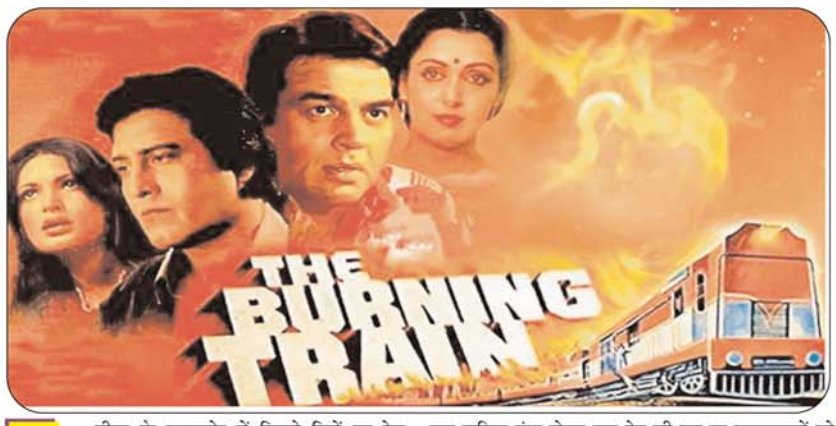

ड़ीसा के बालासोर में पिछले दिनों हुए रेल हादसे ने पूरे देश को झकझोर दिया। हादसों के बावजूद पहिये कभी थमते नहीं हैं। माना जाता है कि रेलों में रोज एक छोटा-सा भारत सफर करता है। रेल केवल पटरी पर ही नहीं दौड़ती, हिंदी फिल्मों में भी यही रेल फिल्म की कहानी और अलग-अलग सिचुएशन का महत्वपूर्ण अंग बनकर दिखाई देती है। लेकिन, हिंदी फिल्मों में हादसों पर चंद फिल्में ही बनीं। याद किया जाये तो 1980 में रवि चोपड़ा के निर्देशन में बनी 'द बर्निंग ट्रेन' अकेली फिल्म थी, जिसकी कहानी ट्रेन हादसे पर केंद्रित थी। उसके बाद आज चार दशक बाद भी किसी निर्माता ने ट्रेन हादसे पर कभी फिल्म नहीं बनाई। जबकि हॉलीवुड में इस विषय पर कई फिल्में बन चुकी हैं। अलबत्ता हिंदी फिल्मों में ट्रेन एक ऐसा रोचक माध्यम रहा, जिसे अकसर फिल्माया जाता रहा। 'द बर्निंग ट्रेन' में विनोद खन्ना, धर्मेंद्र, हेमा मालिनी, जितेंद्र, परवीन बॉबी और डैनी जैसे कई बड़े कलाकारों ने काम किया था। फिल्म की कहानी पहली बार पटरी पर उतरने वाली सुपरफास्ट ट्रेन पर आधारित थी, जिसके पहले सफर में ही उसमें एक साजिश के तहत आग लग जाती है। ट्रेन में बैठे सैकड़ों यात्रियों की जान बचाने के लिए कई उपाय किए जाते हैं, तब ट्रेन को सुरक्षित रोका जाता है। लेकिन, यह फिल्म बहुत ज्यादा पसंद नहीं की गई।सिनेमा के पर्दे पर रेल कई बार कहानी का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा। चाहे आदित्यचोपड़ा की 'मोहब्बतें' का शुरुआती दृश्य हो या श्याम बेनेगल की कला फिल्म 'मम्मो' में फरीदा जलाल की भारत से पाकिस्तान की मर्मस्पर्शी विदाई का, रेल हर जगह मौजूद रही! दर्शकों के दिलों को धड़काने वाली फिल्मों में रेल और उसका प्लेटफार्म प्रेम, द्वेष, मिलन, रहस्य, रोमांच, अपराध, मिलन-जुदाई के साथ आंसू और मुस्कान जैसी भावनाओं को शिद्दत के साथ सेल्यूलाइड पर उकेरता रहा है। भारत के विभाजन की त्रासदी को एमएस सथ्यू की फिल्म 'गर्म हवा' में बखूबी से दर्शाया गया था। अमिताभ बच्चन की फिल्म 'नास्तिक' में भी विभाजन की त्रासदी को दर्शाने के लिए ट्रेन को बतौर प्रतीक लिया गया, तो सनी देओल की फिल्म 'गदर = एक प्रेम कथा' में भारत-पाकिस्तान के बंटवारे के कारण रेलवे प्लेटफार्म और चलती ट्रेन में हिंसा के दृश्यों ने दर्शकों में सिहरन पैदा कर दी थी। जबकि, सलमान खान की 'बजरंगी भाईजान' में इसी रेल ने दो पड़ोसी मुल्कों के संबंधों को दिखाया था।

साल 1934 में आई 'तूफान मेल' में पहली बार चलती ट्रेन में स्टंट दृश्य फिल्माए थे। उस सदी के पांचवें दशक में जब नाडिया हंटर लेकर जब ट्रेन की छत पर खलनायकों को पीटती थी, तो सिनेमा हाल तालियों और सीटियों से गूंज जाता था। चलती ट्रेन में स्टंट के लिए दिलीप कुमार की 'गंगा जमुना' का रेल डकैती सीन बहुत ही रोमांचक था। सलीम जावेद ने इस दृश्य को उलट-पुलटकर 'शोले' में शामिल किया था। बोनी कपूर की फिल्म 'रूप की रानी चोरों का राजा' में विदेशी स्टंट डायरेक्टर की मदद से चोरी का दृश्य फिल्माया गया था। इसी तरह जंजीर, दीवार, दो भाई, सन आफ सरदार, विधाता और द ट्रेन में रेल का रोमांचक उपयोग किया गया था।रेल को शीर्षक बनाकर जो फिल्में बनी उनमें शम्मी कपूर और सुनील दत्त की पहली फिल्म रेल का डिब्बा और रेलवे प्लेटफार्म के अलावा द ट्रेन, ट्रेन टू पाकिस्तान, द बर्निंग ट्रेन, तूफान मेल, चेन्नई एक्सप्रेस, स्टेशन मास्टर और एक चालीस की लास्ट लोकल चर्चित हैं। ज्यादातर फिल्मों में रेल का डिब्बा नायक-नायिका की नोक-झोंक या सौम्य मिलन और फिर प्रेम के पनपने का कारण बनता रहा है। राजेंद्र कुमार की मेरे महबूब, जितेंद्र की मेरे हुजूर, राजेश खन्ना की 'आराधना' से लेकर शाहरुख खान की 'चमत्कार' और 'चेन्नई एक्सप्रेस' तक यह परंपरा लगभग सभी नायकों ने निभाई। 'पाकीजा' में ट्रेन का वह दृश्य यादगार बना जिसमें राजकुमार सोती हुई मीना कुमारी के खूबसूरत पैरों पर फिदा होकर संदेश छोड़ जाते है 'आपके पांव देखे... बहुत खूबसूरत हैं। इन्हें जमीन पर न रखिएगा, मैले हो जाएंगे!' इसी फिल्म के गीत 'चलते-चलते कोई' के अंत में रेल की सीटी का बेहतरीन प्रयोग किया गया था। जुदाई की त्रासदी से दर्शकों का दिल चीर देने वाले रेल दृश्यों में राज कपूर की 'तीसरी कसम' और कमल हसन की 'सदमा' भुलाए नहीं भूलते। इसी तरह 'दिल वाले दुल्हनिया ले जाएंगे' के अंतिम दृश्य में रेल से जा रहे शाहरुख से मिलने के लिए काजोल का हाथ छोड़ते हुए अमरीश पुरी का कहना 'जा सिमरन जी ले अपनी जिंदगी' यादगार संवाद बन गया। कुछ फिल्में और हैं जिनकी कहानी को आगे बढ़ाने में रेल का योगदान है। 'दो उस्ताद' में राज कपूर और शेख मुख्तार रेल के कारण एक-दूसरे से बिछड़ जाते हैं, तो 'हेरा-फेरी' में सलीम-जावेद ने इसी की नकल करके अमिताभ और विनोद खन्ना को मालगाड़ी के माध्यम से जुदा किया था।कुछ कलाकार ऐसे हैं जिन्हें रेल से ज्यादा ही प्यार था। देव आनंद भी ऐसे ही कलाकार थे। उन्होंने फिल्म जब प्यार किसी से होता है में 'जिया हो जिया ओ जिया कुछ बोल दो', सोलहवां साल में 'है अपना दिल तो आवारा' और काला बाजार में 'ऊपर वाला जानकर अनजान है' गाकर दर्शकों को गुदगुदाया था।

ठहरी सी जिंदगी में संघर्ष की तपिश

वैधव्य औरत के जीवन का ऐसा पड़ाव है, जहां आकर उनकी जिंदगी ठहर सी जाती है। ये वो मुकाम है, जहां स्त्री को भेदभाव, अवमानना और अन्याय सहते हुए जीवन जीने को बाध्य होना पड़ता है। लेकिन, समय के साथ समाज का नजरिया बदला है। सिनेमा ने भी विधवा नारी के जीवन पर केंद्रित फिल्में बनाकर इस बदलाव का संकेत दिया। लेकिन, यह सब एक दायरे तक ही सीमित रहा! विधवा उद्धार पर फिल्में बनाने में फिल्मकार आज भी हिचकिचाते हैं। इसलिए कि सिनेमा की रंगीनियत में वैधव्य का सफेद रंग कहीं कमाई में बाधक न बन जाए! इस दमदार विषय को उठाने वाली फिल्मों का अभाव तो लगता है। लेकिन, ऐसे निर्माता-निर्देशक भी हैं, जिन्होंने विधवाओं की ज़िंदगी पर फ़िल्म बनाने का साहसिक फैसला किया। इनमें महबूब खान, राजकपूर, वी शांताराम, यश चोपड़ा से लेकर शक्ति सामंत और राकेश रोशन जैसे बड़े फिल्मकार हैं। फिल्मों में विधवाओं को महज फिलर की तरह उपयोग में लाया जाता रहा। दिखाया जाता कि हीरो की मां विधवा है, जो सिलाई-कढ़ाई करके अपने बेटे का लालन-पालन करती थी। बाद में ये बच्चा या तो %त्रिशूल% के अमिताभ की तरह अच्छा निकलता है या %दीवार% के अमिताभ की तरह बिगड़ जाता है। सबसे पहले महबूब खान ने विधवा महिला के संघर्ष को लेकर 1940 में फिल्म %औरत% बनाई! बाद में 1957 में उसका रंगीन संस्करण %मदर इंडिया% बनाकर एक विधवा की व्यथा-कथा पेश की। नरगिस ने इसमें विधवा का सशक्त रोल निभाया था। दिखाया गया था कि पति की मौत के बाद अकेली औरत कैसे बच्चों को पालती और खुद को जमाने की गंदी नजरों से भी बचाती है।शक्ति सामंत ने भी विधवा प्रेम और विवाह को लेकर कई सफल फिल्में बनाई। इसकी शुरुआत गुलशन नंदा के उपन्यास पर बनी फिल्म %कटी पतंग% से की, जिसमें आशा पारेख ने विधवा की भूमिका निभाई थी। 'कटी पतंग' की कहानी विधवा विवाह पर केंद्रित थी। इससे पहले उन्होंने शर्मिला टैगोर को %आराधना% में विधवा के रूप में दिखाया था।

...और तितली उड़ गई

आवाज़ों का अपना अपना खिंचाव है! ये छिड़ी आवाज़ और पग खिंचते चले गए। आवाज़ें अपना चुंबकीय प्रभाव लिए घूमती हैं। यूकी कोयानागी की आवाज़ में दर्द का जो दरिया बहता है और आंखें छलका देता है वो प्रभाव जापानी कर्णश्रुतियों तक ही सीमित है! कुछ आवाज़ें ऐसी ही सीमितताओं में बंधी रहीं। दक्षिण के लिए हिंदी उच्चारण बड़ी चुनौती रही है और इसके रहते भी वहां के तमिल ब्राह्मण अय्यंगर परिवार से आई एक तितली ने सुरों में ताज़गी की ऐसी सुरभित झन्कार छेड़ी कि अकथित सिंहासन डोलने लगा! 'प्रेम में अंधे होते सुना है पर लोग बहरे भी होते हैं!!' इस तितली की सिमटी सी आवाज़ को लेकर कसा गया सबसे बड़ा तंज़।

'चले जाना ज़रा ठहरो किसी का दम निकलता है ये मंज़र देख कर जाना' (अराउंड द वर्ल्ड)। श्रोता ठहरने लगे और इस उड़ती उड़ती सी कमसिन शोख आवाज़ के मंज़र में खोने भी लगे! इस आवाज़ को भारतीय संगीत प्रेमियों के समक्ष लाने और सजाने का बीड़ा उठाया था संगीतकार शंकर (जयकिशन) ने फिल्मकार राज कपूर के आह्वान और उनकी वकालत पर। सरल-सी शब्द रचना सीधे-सीधे सुर लेकिन फलसफा बहुत गहरा, कविराज शैलेंद्र की कलम से निकला- तितली उड़ी, उड़ जो चली! तितली उड़ने लगी उड़ती चली गई। कई सीमितताओं भरी इस आवाज़ पर फिर एक और सीमितता लिए दायरा चढ़ा कि सिर्फ प्रणय प्रसंग तक ही सीमित रही ये आवाज़। देखो मेरा दिल मचल गया (सूरज), जान ए चमन बांहों में आ जाओ (गुमनाम), आपके पीछे पड़ गई मैं (एक नारी एक ब्रह्मचारी), तुम को सनम पुकार के (दीवाना), और ये आवाज़ भी धीरे-धीरे अपनी जगह बनाती चली गई। शंकर ने उन्हें वे ही गीत दिये जिसमें ये आवाज़ फबती थी। कुछ कैबरे भी उनकी आवाज में थिरका गए! ऐसे ही फिल्म 'जहां प्यार मिले' के एक कैबरे 'बात ज़रा है आपस की' के लिए उन्हें श्रोताओं का प्यार भी मिला और वो अप्रतिम अवॉर्ड भी जो कई नामी-गिरामी गायकों संगीतकारों के लिए जीवन भर ख्वाब ही रहा! कई बड़े नाम फिल्मफेयर नहीं पा सके। जबकि इस अवॉर्ड के लिए शारदा चार बार नामांकित हुईं। 'मेरी आवाज़ और उच्चारण हिन्दी के लिए वाकई चुनौती थी और इस चुनौती को स्वीकार कर पाना आसान नहीं था। शंकरजी ने इसे स्वीकार किया। मेरी विवशताओं और सीमितताओं को समझा, मुझे ट्रेंड किया, अपनी तरफ से गाने की बारीकियों को समझाने वाले गुरु से जोड़ा और मुझे प्रस्तुत किया। श्रोताओं के प्यार और आशीर्वाद ने मुझे शारदा बना दिया।' शारदा राजन विनम्रता से कहती थीं। शारदा अपने पति सौंदरा राजन के साथ जो उन दिनों ईरान एयर में थे, तेहरान में रह रहीं थी और तभी उनकी आवाज़ को वो पर मिले जिनसे वे फिल्मी दुनिया में हलचल मचाने उड़ती चली आईं। वे कहती हैं, 'शारदा की आवाज़! बहुत से लोगों ने इसे सराहा और कई दिलों ने जलन के साथ अस्वीकार भी किया।

सिने सिनेमा

27 साल बाद मिस वर्ल्ड स्पर्धा भारत में

दुनिया भर में चर्चित मिस वर्ल्ड प्रतिस्पर्धा करीब तीन दशक बाद भारत लौट रही है । मिस वर्ल्ड प्रतिस्पर्धा का बहुप्रतीक्षित 71वां संस्करण इस साल नवंबर में आयोजित होने की उम्मीद है । इसकी अंतिम तारीखों की घोषणा अभी नहीं की गई है। इससे पहले, 1996 में भारत में इसका आयोजन किया गया था। प्रतिस्पर्धा का आयोजन करने वाले संगठन मिस वर्ल्ड आर्गनाइजेशन की अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी (सीईओ) जूलिया मॉर्ले ने बृहस्पतिवार को एक संवाददाता सम्मेलन में कहा, 'मुझे 71वें मिस वर्ल्ड फाइनल के लिए भारत को आयोजन स्थल बनाए जाने की घोषणा करते हुए खुशी हो रही है ... हमें आपकी अनूठी और विविधतापूर्ण संस्कृति, विश्व स्तरीय आकर्षक और लुभावने स्थलों को दुनिया के साथ साझा करने का बेसब्री से इंतजार है।' उन्होंने कहा, ' 71वीं मिस वर्ल्ड 2023 में 'अतुल्य भारत' की एक महीने की यात्रा के दौरान 130 राष्ट्रीय चैंपियन की उपलब्धियों को प्रदर्शित किया जाएगा, क्योंकि हम 71वां और अब तक का सबसे शानदार मिस वर्ल्ड फाइनल आयोजित कर रहे हैं।' करीब एक महीने तक चलने वाले इस आयोजन में 130 से अधिक देशों की प्रतिभागी हिस्सा लेंगी।सौंदर्य प्रतियोगिता का भारत में प्रचार-प्रसार करने के लिए यहां आईं मौजूदा विश्व सुंदरी करोलिना बिलावस्का (पोलैंड) ने कहा कि वह अपना ताज इस खूबसूरत देश में दूसरी प्रतिभागी को सौंपने के लिए उत्साहित हैं। भारत ने छह बार यह प्रतिष्ठित खिताब जीता है। रीता फारिया ने 1966 में यह प्रतिस्पर्धा जीती थी। ऐश्वर्या राय ने 1994 में, डायना हेडन ने 1997 में, युक्ता मुखी ने 1999 में, प्रियंका चोपड़ा ने 2000 में और मानुषी छिल्लर ने 2017 में यह खिताब अपने नाम किया था।

शिल्पा की नयी भूमिकाएं

अभिनेत्री शिल्पा शेट्टी की एक फिल्म आ रही है 'सुखी'। यह फैमिली ड्रामा फिल्म होगी। अपनी पिछली फिल्म 'निकम्मा' की तरह इसमें भी शिल्पा ने ग्लैमरस लुक से थोड़ा परहेज किया। अब शिल्पा ने उम्र की मांग को बहुत अच्छी तरह से समझा है व बोल्डनेस को काफी नियंत्रित किया। वे इन दिनों उनका करेक्टर रोल की तरफ ज्यादा ध्यान है।

अगस्त में सनी देओल की फिल्म 'गदर-2' आएगी। मगर इससे पहले ही उन्होंने फिर फिल्मी परदे पर मौजूदगी दिखा दी है। बाईस साल बाद 2001 की फिल्म 'गदर-एक प्रेमकथा' के दोबारा रिलीज होने के साथ ही उन्होंने यह साबित कर दिया है कि उनकी फिल्म की रिपीट वेल्यू आज भी कितनी बुलंद है। 'गदर' को आज के दौर के ढेरों दर्शकों ने बड़े परदे पर मिस किया था। दोबारा आते ही फिर 'गदर' ने हाउसफुल से अपनी शुरुआत कर दी है। निस्संदेह सनी का अपना एक बड़ा प्रशंसक वर्ग है। अब यह दीगर बात है, गंभीर स्वभाव के सनी अपने बारे में ढिंढोरा नहीं पीटते हैं।

शादी और फिर बेटी के जन्म के बाद आलिया ने भी इस बात को अच्छी तरह से जान लिया है कि बॉलीवुड में उनका पुराना रुतबा अब शायद ही वापस लौटे। धर्मा प्रोडक्शन की उनकी फिल्म 'रॉकी और रानी की प्रेम कहानी' अब जल्द रिलीज होगी।

शायद ओटीटी पर रिलीज हो। आज आलिया एक संजीदा महिला के तौर पर सामने आई हैं। अपने फिल्म कैरियर के शुरू में उन्होंने कुछ गाने गाए थे, जिसका ख्याल उन्हें अब आया है। अब वह चाहती हैं कि वह अपना एकल एलबम जारी करें।

करिश्मा का दमदार किरदार

करिश्मा तन्ना टीवी की एक लोकप्रिय अभिनेत्री होने के साथ फिल्मों में भी काम करती रही हैं। अपने 20 से अधिक बरसों के कैरियर में करिश्मा को पहली लोकप्रियता 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी' के इन्दु के रोल से मिली। बाद में वह 'नागिन-3' के अलावा 'बालवीर' और 'बिग बॉस' जैसे और भी कई टीवी शो में लोकप्रिय होती रहीं। फिल्म 'संजू' में एक छोटे रोल और 'ग्रेंड मस्ती' में भी करिश्मा खूब फबी। फिलहाल उनके एक रोल की चर्चा है। उनका वह किरदार है वेब सीरीज 'स्कूप' में क्राइम रिपोर्टर जागृति पाठक का। कुल 6 एपिसोड की 'स्कूप' अभी नेट फ्लिक्स पर रिलीज हुई है। जो क्राइम रिपोर्टर जिग्ना वोरा की आत्मकथा 'बिहाइंड बार्स इन बायकुला-माई डेज इन प्रिज़न' पर आधारित है। करिश्मा इसमें जिग्ना की भूमिका में है। जो अपराध पत्रकारिता की दुनिया में इतनी तेजी से उभरती है कि उससे बहुत लोग ईर्ष्या करने लगते हैं। उसे एक हत्या के जुर्म में जेल भी हो जाती है। करिश्मा के साथ हैरी बवेजा,जीशान अय्यूब भी अहम भूमिकाओं में हैं। सीरीज को हंसल मेहता ने बनाया है। शाहरुख खान की फिल्म 'पठान' ने इस साल 543 करोड़ रुपए का कारोबार करके एक नया रिकॉर्ड बनाया है। हालांकि जब यह गत 25 जनवरी को रिलीज हुई तो इस फिल्म को लेकर इतना विवाद था कि इसके चलने पर भी आशंका थी। लेकिन अब यह यशराज बैनर और शाहरुख खान की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म हो गयी है। अब यही फिल्म टीवी पर आ रही है। 'पठान' का स्टार गोल्ड चैनल पर कल रात 8 बजे वर्ल्ड टीवी प्रीमियर होने जा रहा है। निर्देशक सिद्धार्थ आनंद की इस फिल्म में दीपिका पादुकोण और जॉन अब्राहम भी हैं। क्या कोई कलाकार अपने किसी दृश्य को खुद फिल्मा सकता है? पहली नज़र में इसका जवाब होगा- 'नहीं'। आखिर कोई खुद शूटिंग का भारी-भरकम कैमरा पकड़ कर अपने ऊपर कैसे शूट कर सकता है। लेकिन इस 'सेल्फी युग' में जब अपनी फोटो खुद खींच सकते हैं तो अपनी शूटिंग भी खुद की जा सकती है, यह बात अभिनेत्री रचना मिस्त्री ने साबित कर दी है। हुआ यूं कि स्टार भारत के जिस सीरियल 'ना उम्र की सीमा हो' में रचना, विधि के लीड रोल में है उसमें एक सीन में विधि (रचना) के पैरों को चलते हुए दिखाया जाना था। लेकिन धूप में यह सीन करते हुए कैमरा मैन की परछाई भी दृश्य में आ रही थी। तब उस सीन को न करने का फैसला लिया। लेकिन रचना ने उसका ऐसा हल निकाला कि वह सीन हो गया। रचना कहती है-'मैंने सोचा यदि इस सीन को मैं खुद कैमरा पकड़ कर अपने पैरों की ओर करके शूट करूं तो यह हो सकता है। मैंने कैमरा हाथ में पकड़ा तो पता लगा उसका वज़न 25 किलो है।

मध्यपदेश अधिकारी कर्मचारी पेंशनर महासंघ जिला ग्वालियर की महासभा की बैठक कस्तूरवा गांधी विश्राम गृह कम्पू ग्वालियर में 17/6/23शाम छ बजे आहुत की गयी

महेंद्र शर्मा उप संपादक पुष्पांजलि टुडे

ग्वालियर अधिकारी कर्मचारी महासंघ के ग्वालियर जिला महामंत्री केसी शर्मा द्वारा दी हुई जानकारी के अनुसार बैठक में मुख्य अतिथि मध्यपदेश अधिकारी कर्मचारी महासंघ के संरक्षक तथा विशिष्ट अतिथि महासंघ के मार्ग दर्शक श्री योगेन्द्र सिह भदौरिया व श्री राजेन्दर पसाद गुप्ता रहे।जिले के अध्यक्ष श्री अरुण कुमार शर्मा ने अध्यक्षता की कार्यक्रम का संचालन अतिथि परिचय जिला ग्वालियर के मंत्री के सी शर्मा ने किया।के सी शर्मा ने अपने मीटिंग की भूमिका रखते हुए कहा कि भीषण गर्मी में पेंशनर भाइयो की वृहद उपस्थित शासन की पेंशनरो की लंवित मांगों का निराकरण नही किया जाना और शासन की वेरुखी का द्धोतक है।पेंशन खेरात नही अहर्तादायी सेवा करते हुए पेंशन प्लान के तहत उनका हक है। उन्हें सम्मान पूर्वक जीवन जीने के लिए किसी पर आर्थिक रूप से निर्भर न रहने हेतु दिये जाने की व्यवस्था है।बड़े दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि शासन लंवित डी आर,आयुष्मान योजना का लाभ,पेंशनर के निधन पर कर्मचारियो की भांति एस्गरेसिया की राशि दिये जाने,सीनियर सिटीजन को पूर्व की भांति कंशेसन यात्रा मिले। उन्हें अपनी बात कहने हेतु कर्मचारी कल्याण समिति के कर्मचारियो की भांति मीटिंग में बुलाने के पावधान हो।पेंशनर संगठित शक्ति के साथ शासन सामुहिक रूप से ज्ञापन देकर अपनी मांगे रखेगे।मुख्य अतिथि श्री परोहित जी नेपेशनरो के हित में शासश, पशासन एवं माननीय न्यायलय में की गयी कार्यवाही से अवगत कराया।और यह आश्वत किया कि डी आर में बाधक राज्य पुर्नगठन आयोग की धारा 49 को हटाकर ही रहूगा।पुरोहित जी ने पेंशनर साथियो से माननीय मुख्त मंत्री मध्यपदेश शासन के ग्वालियर पवास दिनांक 24/6/23को

बड़ी संख्या में सामुहिक रूप से मांग पत्र ज्ञापन मुख्त मंत्री जी को दे जिसकी सूचना जिला पशासन को शीघ्र जिला पदाधिकारी दे।श्री पुरोहित जी के पस्ताव का करतल ध्वनि एवं भारत माता की जय के साथ समर्थन किया।अध्यक्षीय उदबोधन में जिले के अध्यक्ष श्री अरुण कुमार शर्मा ने कहा कि श्री पुरोहित जी जो कहते है उसे पूरा करते ही है।श्री शर्मा ने कहा कि पेंशनर का एक संघ न होना भी समस्याओं के निराकरण में बाधक है कभी कोई ज्ञापन देकर आता है तो कभी दूसरा इसका लाभ शासन ले रहा है।हमे एक साथ सामुहिक रूप से मांग करने की आवश्यकता है।आभार व्यक्त श्री राम कुमार निघार सेवा निवृत तहसीलदार ने किया।सभी को मीटिंग में भाग लेने के लिए आभार माना। भाई जाजोरिया जी अस्वथ होते हुए दवा लेकर उपस्थित हुए।अंत मे सभी के स्वस्थ सुखी रहने की कामना करते हुए मीटिंग के समापन की घोषणा की गयी।मीटिंग में श्री श्रीराम गोयल मार्ग दर्शक,डा सुखदेव माखीजा चिकित्साशिक्षा श्री विवेक दीक्षित कार्यकारी अध्यक्ष, श्री राम कुमार गुप्ता कोष पमुख श्री मुकेश खंडेलवाल श्री राजेन्द्र जाजोरिया,ओ पी गुप्ता श्री आर डी शर्मा श्री अशोक भटनागर कार्यालयीन मंत्री श्री सीताराम शर्मा श्री आर पी त्यागी श्रीमती मंजुलता गुप्ता श्री पफूल्ल कुमार तिवारी श्री नंद किशोर गोयल श्री दिनकर शर्मा श्री अमर सिंह चौहान श्री केशव स्वरूप भार्गव श्री दिनेश कुमार मिश्रा श्री एस बीद्विवेदी श्री के के चौधरी श्री कमल किशोर जाटव श्री आदित्य कुमार पधान श्री विष्णू स्वरूप शर्मा श्री राम पकाश सैन श्री सुशील कुमार शर्मा श्री पेमानंद मुदगल श्री भी एम तिवारी श्री मुकेश कुमार सेठी श्री उत्तम चंद एन सी सी विभाग बाल किशन आर्य श्री डी आर आर्य श्री जगराम शाक्य श्री राजेन्द्र पसाद गुप्ता श्री योगेंन्द्र सिह भदौरिया श्री मुकेश दुबे श्री सारस्वत आदि पमुख पमुख पेशन साथियो ने मीटिंग में भाग लिया।

बजरंगी दादा का सपना अमर हो गया....

ग्वालियर। बजरंगी सुप्रीमो रहे पूर्व मंत्री व भाजपा नेता जयभान सिंह पवैया द्वारा देखा गया एक सपना आज अंचलवासियों के लिये गौरव का विषय हैं। यह सपना अपने सांसद कार्यकाल में 23 वर्ष पहले बजरंगी सुप्रीमो दादा पवैया ने वीरांगना लक्ष्मीबाई के बलिदान की गौरव गाथा को देश के हर व्यक्ति तक पहुंचाने व मेला लगाने के लिये संकल्प के रूप में देखा था, जो अब पूरी तरह से पल्लवित हो गया है और अमर हो गया हैं। अब तो शहर भी कहने लगा है कि ÷शहीदों की चिता पर लगेंगे हर वर्ष मेले, वतन पर मरने वालों का यहीं बाकी निशां होगा÷। अब वीरांगना के बलिदान दिवस का आयोजन किसी देश भक्ति के त्यौहार से कम नहीं है। ग्वालियर ही नहीं अंचल व समूचे देश प्रदेश से लोग वीरांगना को श्रद्धांजलि अर्पित करने आते हैं। बजरंगी दादा भी वीरांगना के इस आयोजन को करने के लिये अपने कार्यक्रम व दौरे छोड़कर इसमें जुट जाते हैं। विशेष बात यह है कि पवैया ने इस आयोजन को ग्वालियर की आन बान शान का विषय बना दिया

जरंग भक्त मंडल ने की 2400 किलो हरे चारे की गौभोग सेवा

बजरंग भक्त मंडल द्वारा विगत लगभग 04 वर्षो से निरंतर की जा रही गौसेवा के क्रम में इस रविवार को मार्क हॉस्पिटल गौशाला, गोला का मंदिर ग्वालियर पर 700 किलो एवं कोटेश्वर महादेव गौसेवा समिति द्वारा 1700 किलो कुल 2400 किलो हरे चारे की सेवा संयुक्त रूप से की गई।

*1500 किलो हरे चारे की सेवा राधे राधे, गोवर्धन गोवर्धन,बरसाने बरसाने द्वारा

*200 किलो की सेवा विजेंद्र सिंह की बिटिया के जन्मदिन के उपलक्ष्य में सेवा

*166 किलो हरे चारे की सेवा माधवी शर्मा द्वारा

*116 किलो हरे चारे की सेवा अनिल गुप्ता डोम्स वालो द्वारा

*100 किलो की सेवा अभिषेक शर्मा द्वारा

*100 किलो की सेवा गुप्त रूप से गौसेवक द्वारा

*100 किलो की सेवा अमित गुप्ता द्वारा

*66 किलो की सेवा अंकुश कोटिया द्वारा

*52 किलो की सेवा बजरंग भक्त मंडल द्वारा

*कुल लगभग 2400 किलो हरे चारे की सेवा बजरंग भक्त मंडल एवं श्री कोटेश्वर महादेव गौसेवा समिति के गौसेवक सदस्यों के सहयोग से की गई।

आज की सेवा में बजरंग भक्त मंडल अध्यक्ष आशीष मंगल, सचिव राकेश मंगल, उपाध्यक्ष अमन गर्ग, कार्यकारिणी सदस्य विशाल अग्रवाल, नमन अवस्थी, मनीष राय, अमर जी, योगिता सिंह, हर्ष सिंह, बृजेंद्र सिंह, तोता राम कुशवाह, पंडित जी, शिवम शर्मा, हिमांशु बघेल आदि सदस्य मौजूद थे7

मध्यभारतीय हिन्दी साहित्य सभा की मासिक इंगित कथा गोष्ठी हुई संपन्न

महेंद्र शर्मा उपसंपादक पुष्पांजली टुडे

ग्वालियर। ÷मध्य भारतीय हिन्दी साहित्य सभा ग्वालियर के तत्वावधान में गत दिवस मासिक ÷ इंगित कथा गोष्ठी÷ का आयोजन किया गया । कार्यक्रम कीअध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार डॉ .सुरेश सम्राट ने की ?। मुख्य अतिथि के रूप में वरिष्ठ साहित्यकार एवं कथाकार डॉ प्रतिभा त्रिवेदी सहित राम चरण ÷रुचिर÷ मध्यभारतीय हिन्दी सभा के प्रचार-प्रसार मंत्री, ÷ सभा प्रतिनिधि÷ के रूप में मंचासीन रहे। कार्यक्रम का संयोजन वरिष्ठ कथाकार दिलीप मिश्रा ने किया। संचालन डॉक्टर कमला शंकर मिश्र ने किया।

कार्यक्रम में कहानी प्रस्तुत करने वालों में मंचासीन अतिथियों में डॉ सुरेश सम्राट ने ÷अपने अपने रास्ते÷ डॉक्टर प्रतिभा त्रिवेदी ने÷मन की सरहदें÷, रामचरण रुचिर ÷ ने ÷आस्था का द्वार÷ ÷ सहित संयोजक दिलीप मिश्रा ने ÷गॉव÷, संचालक डॉ कमला शंकर मिश्र ने ÷ बनारसी पान÷ ,संगीता गुप्ता ने ÷एक और मर्यादा÷, व्यंकटेश बलवंत वाकडे ने ÷ पेपर वाला ÷ नामक एक से बढ़कर एक मौलिक कहानियों का वाचन किया । जो पूरे सदन में सराही गई। इस अवसर पर राकेश पांडे दीपक कॉल आदि सहित अन्य श्रोतागण उपस्थित रहे

विधायक क्रिकेट प्रीमियर लीग-2023 : आज सुबह के सत्र में पांच मैच हुये, विधायक सिकरवार ने टीमों से परिचय प्राप्त किया

ग्वालियर। लश्?कर पूर्व विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस विधायक डॉ. सतीश सिकरवार के नेतृत्व में एम.एल.बी. कॉलेज मैदान पर चल रही विधायक प्रीमियर लीग (क्रिकेट मैच) में खिलाडियों में भारी उत्साह देखने को मिल रहा है, हर टीम के साथ समर्थकों की भी भारी भीड आ रही है। जो अपनी-अपनी टीमों का उत्साह वर्धन करते है। बीती रात्रि के सत्र में सात एवं आज सुबह के सत्र में पांच मैच हुये। विधायक डॉ. सिकरवार ने टीमों से परिचय प्राप्त किया और टीमों को शुभकामनाएं दी। कल रात्रि सत्र में एम.एल.बी मैदान पर पहला मैच वार्ड क्रमांक 57 की टीम 57 (एफ) एवं 57 (एच) के बीच खेला गया, 57 (एफ) ने पहले बल्लेबाजी करते हुये 44 रन 7 विकेट के नुकसान पर बनाये। जबाबी बल्लेबाजी करते हुये 57 (एच) 50 रन 5 विकेट के नुकसान पर बनाये और 5 विकेट से मैच जीत हासिल की, मैन ऑफ द मैच विकास मधुरिया को मिला। दूसरा मैच टीम 60 (ई) एवं 60 (एच) के मध्य खेला गया, 60 (ई) ने पहले बल्लेबाजी करते हुये 142 रन 4 विकेट के नुकसान पर बनाये। जबाजी बल्लेबाजी करते हुये 60 (एच) ने 21 रन 9 विकेट के नुकसान पर बनाये और 121 रन से मैच हार गई, मैन ऑफ द मैच युवराज यादव को मिला। तीसरा मैच वार्ड क्रमांक 59 की टीम 59 (सी) एवं 59 (ई) के बीच खेला गया, 59 (सी) ने पहले बल्लेबाजी करते हुये 120 रन 3 विकेट के नुकसान पर बनाये। जबाबी बल्लेबाजी करते हुये 59 (ई) ने 27 रन पर ऑल आउट हो गई और 93 रन से मैच हार गई, मैन ऑफ द मैच हेमंत बघेल को मिला। चौथा मैच वार्ड क्रमांक 60 की टीम 60 (बी) एवं 60 (सी) के मध्य खेला गया, 60 (सी) ने पहले बल्लेबाजी करते हुये 70 रन 4 विकेट के नुकसान पर बनाये। जबाजी बल्लेबाजी करते हुये 60 (बी) ने 57 रन 6 विकेट के नुकसान पर बनाये और 13 रन से मैच हार गई, मेन ऑफ द मैच नरेन्द्र गुर्जर को मिला। पांचवा मैच वार्ड क्रमांक 59 की टीम 59 (ए) एवं 59 (एफ) के मध्य खेला गया, 59 (एफ) ने पहले बल्लेबाजी करते हुये 78 रन 4 विकेट के नुकसान पर बनाये। जबाजी बल्लेबाजी करते हुये 59 (ए) ने 61 रन 5 विकेट के नुकसान पर बनाये और 17 रन से मैच हार गई, मेन ऑफ द मैच आदर्ष षर्मा को मिला। छठवा मैच वार्ड क्रमांक 57 की टीम 57 (बी) एवं 57 (डी) के मध्य खेला गया, 57 (डी) ने पहले बल्लेबाजी करते हुये 109 रन 2 विकेट के नुकसान पर बनाये। जबाजी बल्लेबाजी करते हुये 57 (बी) ने 35 रन 9 विकेट के नुकसान पर बनाये और 74 रन से मैच हार गई, मेन ऑफ द मैच रवि बघेल को मिला। कल रात्रि के सत्र में आखिरी मैच वार्ड क्रमांक 58 की टीम 58 (ए) एवं वार्ड क्रमांक 58 की टीम 58 (सी) के मध्य खेला गया, पहले बल्लेबाजी करते हुये 58 (ए) ने 43 रन 8 विकेट के नुकसान पर बनाये, जबाबी बल्लेबाजी करते हुये 58 (सी) 44 रन 1 विकेट के नुकसान पर बनाये और 9 विकेट से जीत हासिल की, मेन ऑफ द मैच समर्थ मिश्रा को मिला।

उपलब्ध हैं।
फाइनेंस / लोन / होम लोन
ग्वालियर मुरैना बामोर गोहद मालनपुर डबरा इत्यादि जगह में आप मकान खरीदने ओर प्लॉट खरीद कर मकान बनाने के लिए लोन के हैं जरुरत तो करें हमसे संपर्क।
संपर्क करें
07974596469

प्रो. अमित श्री हनुमते नमः प्रो. दीपक
मो. 7772843302 9617243208 मो. 9639422665 7024015532
जय दंदरौआ सरकार इन्टरप्राइजेज
डिस्पोजल

दोना पत्तल, डिस्पोजल प्लेट, ग्लास, पत्ते वाली पत्तल, दोने
निर्माता एवं थोक विक्रेता
शादी, पार्टी एवं अन्य शुभ कार्यो आदि में सभी सामान फैक्ट्री रेट पर उपलब्ध है

विधानसभा चुनाव के मद्देनजर ईवीएम की एफएलसी 20 से

ग्वालियर 7 जिले में भारत निर्वाचन आयोग एवं मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के निर्देशानुसार आगामी विधानसभा चुनाव के मद्देनजर ईवीएम (बीयू, सीयू एवं व्हीव्हीपीएटी)

मशीनों की एफएलसी (प्रथम स्तरीय जाँच) का काम 20 जून से शुरू होगा। जिले में बीईएल बैंगलूरू से प्राप्त हुई ईवीएम का वेयर हाउस कलेक्ट्रेट प्रांगण में स्थित है। यह वेयर हाउस 20 जून को प्रात: 9 बजे खोला जायेगा। वेयर हाउस खोलने के दौरान और एफएलसी की प्रक्रिया के समय राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त राजनैतिक दलों के प्रतिनिधिगण भी मौजूद रह सकेंगे। एफएलसी कार्य पूर्ण होने तक प्रतिदिन प्रात: 9 बजे वेयर हाउस खोलकर सायंकाल 7 बजे तक ईवीएम की एफएलसी की जायेगी। इसके लिये सभी राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त राजनैतिक दलों को अपने प्रतिनिधि का पहचान पत्र बनवाने के लिये दो रंगीन पासपोर्ट साईज के फोटोग्राफ एवं एक फोटो आईडी नोडल अधिकारी ईवीएम को एफएलसी प्रारंभ होने से एक दिन पहले अनिवार्य रूप से उपलब्ध करानी होगी। तभी एफएलसी कक्ष में प्रवेश के लिये प्रवेश पत्र जारी किए जा सकेंगे।

पुष्पांजली टुडे
आम सूचना / कोर्ट नोटिस
साइज फिक्स रूपये
8x4 cm 1120
10x4 cm 1400
12x4 cm 1680
अन्य साइज 50/- sq.cm.
बुकिंग के लिए संपर्क करें
0751-4050784
8269307478

पुष्पांजली टुडे
गुमशुदा / खोया -पाया
नाम परिवर्तन
साइज फिक्स रूपये
8x4 cm 1050
अन्य साइज 50/- sq.cm.
बुकिंग के लिए संपर्क करें
0751-4050784
8269307478

स्वामी, प्रकाशन, मुद्रक एवं संपादक भरत सिंह चौहान द्वारा वॉइस ऑफ मध्यांचल मीडिया नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड 101 वैष्णोपुरम एबी रोड बिरलानगर ग्वालियर म.प्र. 474004 से मुद्रीत करा कर दीपू इलेक्ट्रॉनिक हनुमान मंदिर के पास भिण्ड रोड गोले का मंदिर जिला ग्वालियर मध्यप्रदेश 474005 से प्रकाशित। भरत सिंह चौहान पी. आर. बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार। E-mail : Pushpanjalitoday@gmail.com 0751-4050784, Mob.:8269307478